



A.S. Rs 100

Snehal Sindhu



Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010

Issue 02

Feb 2024

Pages 40

A.S. Rs 100



गुरुहरि काकाजी महाराज के 72वे साक्षात्कार दिन के
भावपूर्ण जय श्री स्वामिनारायण...

सत्संग समाचार

* गुरुवार, दि. ४ जनवरी को प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स तथा संतबहनोंने कलगाम में प्रज्ञा प्रबोधिनी ट्रस्ट और नारगोल में प.भ. युगेशभाई शुक्ल-प.भ.जयश्रीबहन के घर पधरामणी की।



Padhramni At Kalgam



At Yugeshbhai's home - Nargol

दि. ५ को बिलीमोरा में प.भ. नरोत्तमभाई मिस्त्री, प.भ. धर्मेशभाई, प.भ. हिरनभाई मिस्त्री, प.भ. रमेशभाई, प.भ. नरसिंहभाई, वलसाड में प.भ. श्रेयशभाई, प.भ. रमेशभाई ऐसे कई हरिभक्तों के घर सत्संग और झोली की सभा हुई।



At Narottambhai's home



At Dharmeshbhai's home



At Shreyasbhai's home



At Rameshbhai's home



At Bakulbhai's home



At Pritiben's home



At Prakashbhai's home



At Hirenbhai Mistry's home



At Meenakshiben's home



At Shantaben's home

✽ शुक्रवार, दि. ६ जनवरी को वापी में प.भ. बकुलभाई, प.भ. प्रीतिबहन, प.भ. प्रकाशभाई, प.भ. मिनाक्षीबहन, प.भ. शांताबहन के घर संतभाईयोंने तथा संतबहनोंने पधरामणी की और सत्संग किया। साथ ही भरतभाई का ७०वाँ प्रागट्यदिन भी मनाया और सभी हरिभक्तोंने मकरसंक्रांति की झोली भी दी।

उसी दिन शाम को वापी के अमीरस हॉल में भरतभाई का ७०वाँ प्रागट्यदिन सभी संतभाईयों तथा करीब १०० हरिभक्तों की उपस्थिति में भावपूर्ण मनाया गया। विशिष्टरूप से इस सभा में अंकलेश्वर से ख़ास प.पू. विजयप्रकाशस्वामीजी और प.पू. माधवस्वामीजी पधारे थे। उनकी उपस्थिति से सभीको बहुत आनंद आया।

हरिभक्तों के माहात्म्यदर्शन और संतभाईयों के आशीर्वचन के बाद प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग के साथ इस भव्य उत्सव की पूर्णाहुति हुई।



P.P.Bharatbhai's Birthday celebration at Vapi



✽ शनिवार, दि. ७ जनवरी की सुबह रमला-घोलार के हरिभक्तों के भाव को ग्रहण कर प.भ. देवाभाई के वहाँ विशिष्ट महापूजा का आयोजन हुआ था। साथ ही भरतभाई के प्रागट्यदिन निमित्त सभीने आनंद किया। उसके बाद प.भ. रमणभाई, प.भ. प्रेमाभाई के नये घर तथा प.भ. भाईलालभाई के घर पधरामणी की।

उसी दिन शाम को सन् २०२४ की प्रथम भजन संध्या चीखली के लाड समाज की प्रजापति वाडी में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजनों के साथ मनाई गई।

प्रारंभ में फूलों की वर्षा के साथ पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों का विशिष्ट स्वागत हुआ।



Padhramni at Rumla-Gholar



Mahapooja and Sabha at Rumla-Gholar



Bhajan Sandhya at Chikhli





Bhajan Sandhya at Chikhli



प.पू. वशीभाई ने कहा कि २०२४ की प्रथम भजन संध्या वापी, चीखली, रुमला-घोलार, अेरु, नवसारी ऐसे पूरे गुजरात मंडल से जुड़े भक्तों एवं मुंबई से करीब ७५ मुक्तों की हाजरी में मना रहे है। आज सफला एकादशी का भी पर्व है। आज के दिन स्वामिनारायण भगवानने स्वामिनारायण मंत्र दिया था। २०२४ की साल में बहुत ही अद्भुत कार्य होनेवाले है। **दि. २२ जनवरी को अयोध्या में रामलला की मूर्तिप्रतिष्ठा होने जा रही है।** स्वामिनारायण भगवान पृथ्वी पर पधारे तब अलग-अलग जाति के लोगों को सत्संग करवाया और तब सब अलग-अलग मंत्र बोलते थे। फिर उन्होंने स्वामिनारायण मंत्र दिया।

योगीजी महाराज को गोंडल में काम चालु था तब सापने काटा था। तब शास्त्रीजी महाराजने देरी में जाकर सभीको धुन करने आज्ञा की। २४ घंटे बाद पूरा विष उनकी छोटी ऊंगली द्वारा निकल गया। तो यह मंत्र हम सिद्ध कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. विजयप्रकाशस्वामीजी ने कहा कि २२२ साल पहले सौराष्ट्र के छोटे से फरेणी गांव में सद्गुरु रामानंदस्वामीजी की त्रयोदशी की सभा में भगवान स्वामिनारायणने स्वामिनारायण महामंत्र दिया। जिसकी महिमा उन्होंने खुद गाई है। उसके बाद आध्यात्मिक धर्म के मुगट समान स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना हुई। स्वामिनारायण मंत्र में इतनी शक्ति है कि यमदूत भी इस मंत्र को सुनकर भाग जाते है। तो वह स्वामिनारायण मंत्र का जाप हम निरंतर करते रहे।



उसके बाद उन्होंने अयोध्या में रामचंद्रजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का कार्यक्रम होने जा रहा है उस उपलक्ष्य में विशिष्ट भजन सुनाये और उस दिन वडताल संस्था २० दिन तक २५ लाख भक्तों को प्रसाद खिलानेवाली है वह बताकर सभी की सेवाभावना की बहुत सराहना की।

हमारे युवकोंने राम-लक्ष्मण की विशिष्ट वेशभूषा धारण कर सभीको दिव्य रामचंद्रजी के दर्शन कराये।



Bhajan Sandhya at Chikhli



Bhajan Sandhya at Chikhli



प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि मनुष्य का स्वभाव आनंद करना है। उसमें आज ऐसा विजयप्रकाशस्वामीजीने भजन गाकर सबको बहुत आनंद कराया। गुरुहरि काकाजी महाराजने हमें बहुत धुन करवाई थी। जिसके कारण आज हमें स्वामिनारायण मंत्र जपने में आलस नहीं आती, आनंद से धुन करते है। वे कहते थे कि अगर कुछ भी नहीं हो

सके तो आप स्वामिनारायण मंत्र सिद्ध कर लो। काकाजी के पास कोई भी आता तो वे धुन करने की Technique देते थे। इससे रोग मिट जाते है, तकलीफ दूर होती है, काल-कर्म-माया का बंधन नहीं रहता और काले



नाग का जहर भी उतर जाता है, ऐसा बहुत बलवान मंत्र है। तो हम निर्विकल्प

होकर भजन करें। स्वामिनारायण भगवानने मुफ्त में यह मंत्र दिया है। तो हम यह मंत्र को हमारे जीवन में सुदृढ करें वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने ॐ स्वामिनारायण भजन द्वारा मंत्र का महिमागान किया।

अंत में भरतभाई के प्रागत्यदिन निमित्त विशिष्ट केक कटिंग हुआ।



P.P. Bharatbhai's Birthday celebration at Chikhli

* सोमवार, दि. ८ से गुरुवार, दि. ११ जनवरी दौरान सभी संतभाईयोंने सूरत, अंकलेश्वर, नवसारी में प.भ. हिंमतभाई, प.भ. पुरुषोत्तमदासजी, प.भ. अल्पेशभाई-प.भ. शिल्पाबहन, प.भ. पन्नाबहन मिस्त्री, प.भ. आनंदभाई-प.भ. वृत्तिकाबहन, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के हरिभक्त प.भ. आनंदभाई जरीवाला, प.भ. जय परसानिया, प.भ. गोरधनभाई, प.भ. विजयभाई सोलंकी, प.भ. दामजीभाई प्रजापति, प.भ. भारतीबहन राठोड, प.भ. नैनेशभाई-प.भ. शीतलबहन, प.भ. श्रेयशभाई कापडिया की ऑफिस, प.भ. दिनेशभाई जैसे कई हरिभक्तों के घर सत्संग करके झोली की सभा भी की तथा भरतभाई का प्रागत्यदिन मनाकर आनंद किया।



At Himmatbhai's home



At Purushottambhai's home



At Alpeshbhai's home



At Pannaben's home - Surat



At Aanandbhai's home



At Anantbhai Jariwala's home



At Ramkumar's home



At Jay Parsania's home



At Vijay Solanki's home



At Gordhanbhai's home



At Damjibhai's home



With Naineshbhai



At Bhartiben's home



At Shreyasbhai's home



At Dineshbhai's home

* शुक्रवार, दि. १२ जनवरी को मकरसंक्रांति के पर्व निमित्त झोली का कार्यक्रम ठाणे में प.भ. प्रेमजीभाई के घर से प्रारंभ हुआ। प.पू. भरतभाई और पू. राजुभाईने झोली की सभा की और भक्तोंने भरतभाई का प्रागट्यदिन मनाकर आनंद भी किया।



At Thane for Jholi

* शनिवार, दि. १३ जनवरी को दिल्ली अक्षरज्योति के वरिष्ठ संतबहन प.पू. आनंदीदीदी का ६३वाँ प्रागट्यदिन प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. अश्विनभाई और स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में आनंद और उत्साह के साथ मनाया गया।

आनंदीदीदी के आसन के पीछे "She is just my tape recorder... उसमें से मेरी जो आवाज होगी, वो ही कैसेट बोलेगी।" गुरुजी के राजीपा के उद्गार सुशोभन में प.पू. गुरुजी और गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति के साथ दर्शाया गया था।

प्रारंभ में कई हरिभक्तोंने आनंदीदीदी के विशिष्ट गुणों का दर्शन स्वानुभाव के प्रसंगो के कराया।

प.पू. आनंदीदीदी ने आशीष बरसाते हुए कहा कि इतने साल सत्संग करने बाद भी मन स्वभाव-प्रकृति के चपेट में आ जाता है। लेकिन उसे न गिनते हुए हमारे सभी प्रगट स्वरूपों हमारा आध्यात्मिक मूल्य कैसे बढ़े उसके लिये परिश्रम करते रहते हैं। योगीजी महाराज एक सामान्य टपाली को भी टपाली साहब करके बोलते थे। वो हमें सीखा रहे थे कि छोटे-बड़े हर किसीको हमें सन्मान देना चाहिए। हमारी भाषा में विनम्रता होनी चाहिए। गुरुहरि काकाजी के दर्शन किये तब ज्यादा कुछ पता नहीं था, जो बात आज गुरुजी के संबंध से हुई है कि संबंध में आनेवाले को सुखी करना। आज सभी स्वरूपों काकाजी के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। काकाजीने दि. ७ मार्च, सन् १९८६ को देहलीला संकेली। यहाँ कभी कोई कुछ शुभ कार्य का मुहूर्त पूछने आते हैं तो गुरुजी सहज ही कहते की ७ तारीख शुभ ही है, जो कार्य करना हो वो करो। तो वे दि. ७ को बहुत दिव्य मानते हैं। दिनकरभाई हर साल मेरे जन्मदिन पर आते ही हैं। उनका भजन 'सोचता हूँ कि तुम कितने उँचे हो पर...' वह मुझे बहुत पसंद आता है। मुंबई के प.भ. संजीवभाई धवन के बेटे प.भ. वरुणभाई की यहाँ शादी थी तब वे मंदिर में दर्शन करने आये थे। उन्होंने बताया कि अमरिका में वरुणभाई के Convocation में उनके पिता नहीं पहुँच सके तो खुद दिनकरभाई वहाँ खास गये और ३ घंटे बैठे भी थे। आज के युग में सच्चे संत के सिवा ऐसा निःस्वार्थ संबंध कौन कर सकता है? वैसे ये स्वरूपों हमारे जैसी क्रिया करते हैं लेकिन जैसे काकाजी कहते थे कि गोकुल गांव का पींडा न्यारा। वैसे हम पहचान नहीं पाते। गुरुजीने अपना हृदय निकालकर यहाँ के भक्तों



P.P. Aanandididi's Birthday celebration at Delhi

को दे दिया है। काकाजी कहते थे कि आप मूर्ति को भूल जाते हो, मूर्ति भूलकर सब क्रियाएँ करते हो। वह बात गुरुजी के जीवन से सहज दर्शन होता है कि वे हरपल भगवान में रहते हैं। हमें Doctor, Pilot, Driver का भरोसा आता है, जिसका हमें अनुभव भी नहीं है। लेकिन जो भगवान धारक संत मिले हैं, जो जन्म-मरण से मुक्ति दिलायेंगे उसका भरोसा नहीं आता। ऐसे सत्संग में भजन, संग, महिमा यह बुनियादी बातें

हम समझ लेंगे तो हमारा मार्ग सरल हो जायेगा। सत्संग में हमें हमेशा हमारा संग सकारात्मक रखना चाहिए। महिमावाला संग रखेंगे तो वो हमें साधु के साथ जोड़ेगा। तो हम गुरुजी के परिश्रम को समझें और अगले साल तक गुरुजी खुद ऐसे कहे कि मेरे शिष्य ऐसे तैयार हो गये कि उनका मायिकभाव टल गया... वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि जैसे भूत किसीको छोड़ता नहीं वैसे ये गुणातीत पुरुष हमें कैसे छोड़ेंगे? गुरुहरि काकाजी कहते थे कि हमारे जीव को ५१ भूत चिपक गये हैं। उसमें से ५० भाग गये हैं। जो एक बाकी है वो गुरुजी निकाल ही देंगे। गुरुजी बहुत दयालु हैं, वे जो भी कहते हैं वो हमारे लिये ही होता है। हमारे गुणातीत स्वरूपों का प्रेम किसी शर्त पर आधारित नहीं है, केवल बिनशर्ती प्रेम है। तो वो जरूर असर करता है। वैसे हम भी हमारे परिवार, जिसके साथ काम करते हैं, उनके साथ ऐसा प्रेम करना है। गुरुजी कहते हैं कि आनंदीदीदी टेपरेकोर्डर हैं। मैं ऐसा कहता हूँ कि आनंदीदीदी काकाजी की टेपरेकोर्डर हैं और गुरुजी विडियो हैं। हम जो मायिकभाव निकालने की बात कर रहे हैं, तो अगर हम हर प्रसंग में अहोहोभाव रखेंगे तो मायिकभाव निकल जायेगा। जो कुछ भी होता है वह परम दिव्य मानना। तो वह सहज ही कर पाये वही प्रार्थना।

पवई और शिकागो मंडल की ओर से पू. अञ्जीबहनने आनंदीदीदी को विशिष्ट हार पहनाये।

अंत में युवतीओंने नृत्य प्रस्तुत कर अपना भाव आनंदीदीदी के चरणों में रखा।



P.P. Aanandididi's Birthday celebration at Delhi

* शनिवार, दि. १३ और रविवार, दि. १४ जनवरी को प.पू. वशीभाई, पू. संदीपभाई और हरिभक्तोंने पूणे में प.भ. नवलभाई, प.भ. अश्विनभाई-प.भ. स्नेहलबहन, प.भ. चैतन्यभाई-प.भ. दिपालीबहन, प.पू. ज्योतिबहन के भक्त प.भ. रीनाबहन, प.भ. केवलभाई-प.भ. गायत्रीबहन, प.भ. रंजनबहन, प.भ. निलेशभाई पाटील, प.भ. दीपकभाई सालुंके, प.भ. खोलपे साहब, प.भ. दीपकभाई गुवारे,



At Navalbhai's Home, Pune

At Snehalben's Home, Pune



At Chaitanyabhai's home, Pune



At Kevalbhai's home, Pune



At Ranjanaben's home, Pune



At Nileshbhai and Pravinbhai's home, Pune



At Deepakbhai Salunkhe's home, Pune



At Mr. Kholpe's home, Pune



At Deepakbhai Gaware's home, Pune

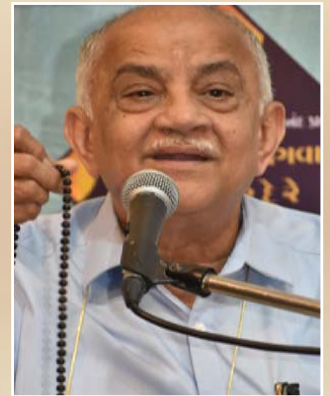


At Tulsi Sadhna Kutir, Lonavala

प.भ. प्रवीणभाई खट्टल जैसे कई हरिभक्तों के घर महापूजा, सत्संग और झोली की विशिष्ट सभा की। साथ ही लोनावला की तुलसी साधना कुटिर भी पधारे थे, जहाँ गुरुहरि काकाजीने बहुतबार शिबिर की थी।

✽ रविवार, दि. १४ जनवरी मकरसंक्रांति का पर्व और प.पू. ज्योतिबहन का स्मृतिदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि हम जिसको भी माने उसे दिल से माने तो वो जरूर जवाब देंगे। वैसे ज्योतिबहन के साथ जो भी जुड़े वो उनके तन्मय होकर आज जीवन जी रहे है। झोली भाव का उत्सव है। स्वामिनारायण भगवानने संतों को माला करने और झोली मांगने की आज्ञा की। वे झोली में सभी भक्तों के प्रारब्ध, तकलीफ मांगते है। संतों के पास दिव्य शक्ति थी कि





Jholi Sabha at "Akshardham" Temple, Powai

उनको झोली मांगने की जरूरत ही नहीं होती थी। हमारी गुणातीत परंपरा यानि परब्रह्म की भक्ति करनी वह है। शास्त्रीजी महाराजने भी भक्तों की सेवा ही लेकर मंदिर बनाये। आज सूर्य दिशा बदलता है वैसे हमारे सत्पुरुष हमें दिशा बदलने बोलते है। सभी हरिभक्तोंने मंदिर के Project के लिये भाव से सेवा दी है। जो भी सेवा देता है उसे भगवान दोगुना करके देता है। बिना बोले कई हरिभक्तोंने सामने से झोली की सेवा दे दी। तो सभी धुन करते रहना ताकि हमारे मंदिर के सारे कार्य अच्छे से आगे बढे और काकाजी को राजी करने हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

पू. माधुरीबहन ने कहा कि सत्संग करते हुए हमें जो हमारे स्वभाव-प्रकृति बीच में आते है उसे आज हमें स्वरूपों को झोली के रुप में अर्पण कर देना है। मकरसंक्रांति के दौरान हमारे सभी संतभाईयों बहुत सारे स्थान पर खुद विचरण कर झोली लेते है। आज तक हमारी जो भी गलतियाँ हुई हो उन्हें यह संतभाईयों माफ कर दे ऐसी प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज ज्योतिबहन का स्मृतिदिन भी है। उन्होंने देहलीला संकेली उसके पहले मुंबई में सबको दर्शन देने लीलावती अस्पताल में उन्हें Admit किया गया और दि. १४ जनवरी को वही पे देह छोडा। संतों का जीवन भक्तों के लिये होता है। २००३ में ये मंदिर बना उसके बाद विरार तक हम झोली लेने जाते थे। तब से जो शुरु हुआ वो आज तक झोली कभी यहाँ खाली नहीं हुई है। संतों को तो नियम के रुप में झोली मांगने जाना ही है। स्वामीजी, संतों को कई भक्तों ऐसा भी बोलते है कि आपको जितना चाहिए हमें बताये लेकिन आप झोली मांगने मत जाओ। तो भी संतों झोली के लिये जाते ही है। वहाँ दिल्ली में भी आज प.पू. गुरुजी और प.पू. दिनकरभाई झोली के लिये करीब २०० लोगों के साथ ढोल-नगारों के साथ पधरामणी कर रहे है। हमारे शास्त्रों में दान का बहुत महत्व बताया है। 'नारायण हरे सच्चिदानंद प्रभो' बोलकर यह झोली की सेवा लेते है। आज Online का जमाना आ गया है, तो सभी



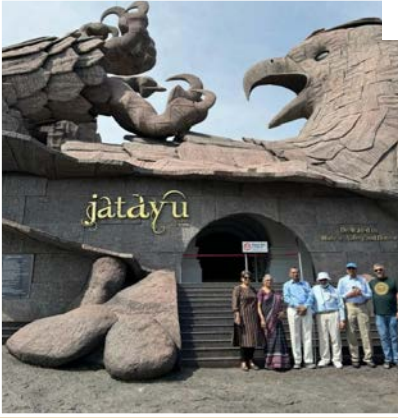
QR code द्वारा बिना बोले झोली की सेवा दे देते है। पूराणों और विज्ञान भी बताते है कि आज सूर्य उत्तर की ओर गति करता है। उत्तर दिशा सकारात्मकता की निशानी है। उसी बात को दोहराकर गुरुहरि काकाजी महाराज कहते थे कि सत्संग हुआ तो हमारी दृष्टि बदल गई। अब संकल्प करना है कि कोई फरियाद नहीं, कुछ मांगना नहीं और कोई आदेश नहीं। काकाजीने हमें जो कुछ भी दिया है उतने में खुश रहना चाहिए। हमेशा देने ही वृत्ति रखनी चाहिए। भगवान और प्रगट संत जो बोलते है वही हमें करना है। केवल २ जन के गुण लेने शुरु करेंगे तो धीरे-धीरे सभीके गुण सहज ही दिखने लगेगे। वह हम सहज ही कर पाये वही प्रार्थना।

* सोमवार, दि. १७ को प.पू. वशीभाई के मित्र प.भ. संपत्तभाई काबरा के घर झोली के लिये वे खास पधारे थे।

* बुधवार, दि. १७ से दि. २० जनवरी दौरान प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स केरेला के Thiruvananthapuram में पधरामणी के लिये खास पधारे थे। वहाँ प.भ. राधाबहन, उनकी बेटी प.भ. दिव्याबहन और राधाबहन के जमाई प.भ. बोबीभाईने अच्छी सेवा की और सारी व्यवस्था बहुत अच्छे से सँभाली थी।



At Thiruvananthapuram



दि. १७ को ही वे श्री पद्मनाभस्वामी के मंदिर में खास दर्शन के लिये पधारे थे। उसके बाद जटायु की शिल्प की खास मुलाकात भी ली थी।

* गुरुवार, दि. १८ जनवरी को प.पू. वशीभाई नासिक में प.भ. विकासभाई-प.भ. तृप्तीबहन सोनावणे, प.भ. सचिनभाई-प.भ. जयाबहन कुकडे, प.भ. योगीताबहन गांगुरडे, उनकी बेटी प.भ. सुदर्शनाबहन, योगीताबहन के जमाई प.भ. रामचंद्रभाई के घर झोली तथा महापूजा की सभा के लिये खास पधारे थे।

साथ ही नासिक के निलकंठवर्णी के प्रसादी तीर्थस्थान स्वामिनारायण मंदिर भी दर्शन करने पधारे थे।

* शुक्रवार, दि. १९ जनवरी को तारदेव मंदिर में प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई की हाजरी में झोली की सभा हुई।



Mahapooja at Nasik



At Nasik



Jholi Sabha at Tardeo Temple

* सोमवार, दि. २२ जनवरी को अयोध्या में रामलल्ला की मूर्ति की नूतन मंदिर में शास्त्रोक्त विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा हुई, जिसमें भारत के प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदीजी, उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्रीमती आनंदीबहन पटेल, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यराजजी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंचालक श्री. मोहन भागवतजी प्रमुख स्थान पर थे। इसके अलावा कई संतों-महंतों और भारत के विविध क्षेत्र से हजारों आमंत्रित महानुभावों की उपस्थिति में यह भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ।



Consecration of Ramlalla Idol celebration

इस खुशी में पूरे भारत में तथा विश्व के कई देशों में भी दिपावली जैसा आनंद का माहौल बन गया था। अक्षरधाम, स्वामिनारायण मंदिर, पवई में इस अवसर को विशिष्ट रूप से मनाया गया।

सुबह में महापूजा के बाद सभी संतभाईयों, संतबहनों और कई हरिभक्तों विशिष्ट शोभायात्रा



में शामिल हुए और बेन्डबाजे के साथ करीब १ किलोमीटर तक सभीने चलकर यात्रा की। बहनोंने भी सिर पर कलश लिया था और करीब ११.३० बजे शोभायात्रा की पूर्णाहुति के बाद मंदिर के हॉल में विशिष्ट सभा हुई और सभीने पूरे आनंदोत्सव के साथ यह उत्सव मनाया। इस शुभ अवसर पर योगी डिवाइन सोसायटी-मुंबई द्वारा संचालित पवई मंदिर की ओर से १००० प्रसाद के पकेट का वितरण हुआ।

शाम को भी दिपावली जैसे ही मंदिर की सजावट हुई थी और कई हरिभक्तों के घर श्री रामचंद्रजी की पूजा, अर्चना तथा आरती हुई।

पूरे कार्यक्रम में पवई की संतबहनें और सभी युवा कार्यकरोंने बहुत ही उत्साह के साथ सारी व्यवस्था सँभाली।

✽ मंगलवार दि. २३ और बुधवार, दि. २४ जनवरी को प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई और पू. किशोरभाई मास्टर्स अहमदाबाद में प.भ. हरिहरभाई, प.भ. नैनेशभाई, प.भ. शंकरभाई-प.भ. शांताबहन (शिकागो), प.भ. दिनेशभाई-प.भ. हंसाबहन, प.भ. कांतिभाई (शिकागो), प.भ. राजेशभाई-प.भ. चेतनाबहन, प.भ. हरिशभाई-प.भ. हंसाबहन के घर महापूजा-सत्संग करके आनंद किया।

✽ गुरुवार, दि. २५ जनवरी को पोषीपूजम और गुणातीतानंदस्वामी के दीक्षादिन पर्व निमित्त संतभगवंत साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. अश्विनभाई और पवई के संतभाईयों तथा स्थानिक संतभाईयों, हरिभक्तों की उपस्थिति में अनुपम मिशन में भक्तिभाव से मनाया गया।

At Ahmedabad



At Hariharbhai's home



At Naineshbhai's home



At Shankarbhai's home



At Dineshbhai's home



At Kantibhai's home



At Chetanaben's home

उसके बाद दिनकरभाई के जन्मस्थान उत्तरसंडा पधारे और वहाँ उनके बड़े भाई प.भ. हरिहरभाई और छोटेभाई प.भ. रजनीकांतभाई के घर पधरामणी की।

✽ शुक्रवार, दि. २६ जनवरी को गुरुहरि काकाजी महाराज का प्राकट्यस्थान और काकाजी-पप्पाजीने जहाँ अपना बचपन बिताया वह नडियाद के 'प्रसादरज' मंदिर की मूर्तियों का १२वें पाटोत्सव निमित्त



At Anoopam Mission-Mogri

विशिष्ट महापूजा प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, पू. इलेशभाई और अन्य संतभाईयों, गुणातीत ज्योत से पू. हंसाबहन वींछी (गुणातीत), पवई से पू. माधुरीबहन और अन्य संतबहनों तथा हरिभक्तों की उपस्थिति में की गई। संतभाईयोंने विधिपूर्वक महापूजा करवाई।



At Prasadraj-Nadiad

उसके बाद प.भ. अनिलभाई (कोन्ट्राक्टर) के घर भी पधरामणी की।

* रविवार, दि. २८ जनवरी को गुरुहरि काकाजी महाराज के परम लाडले, पवई मंदिर के वरिष्ठ संत प.पू. भरतभाई का ७०वाँ प्रागत्यदिन प.पू. दिनकरभाई तथा सभी संतभाईयों, संतबहनें तथा शिकागो से



At Anilbhai's home

प.भ. पंकजभाई-प.भ. हर्षाबहन शाह, पेरिस से खास पधारे प.भ. प्रवीणभाई-प.भ. हर्षाबहन लाड एवं देश-विदेश से पधारे कई हरिभक्तों की उपस्थिति में आनंद और भक्तिभाव से CETTM MTNL के Ground में मनाया गया।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai



सन् १९७८ में गुरुहरि काकाजी महाराज के हीरकपर्व में षण्मुखानंद हॉल में जैसे सुशोभन किया गया था उसी महोत्सव की स्मृति में आज मंच की सजावट युवकोंने सुंदर तरीके से की थी।

शुरुआत में दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई और अन्य संतभाईयों का स्वागत विशिष्ट रथों पर युवकों के नृत्य के साथ आनंदोत्सव करते हुए किया गया।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai



माहात्म्यदर्शन की शृंखला में पू. आयुषभाई मिश्रा ने कहा कि जैसे ही जनवरी का महिना शुरु होता है कि भरतभाई के प्रागट्यदिन की गूँज सुनाई देती है। स्वामिनारायण भगवान का सबसे बडा वरदान यानि वे गुणातीत संत द्वारा पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहेंगे। हम बहुत भाग्यशाली है कि ऐसे प्रगट संतभाईयों की हमें भेट मिली। आज हम प्रत्यक्ष की बात सहज में कह रहे है, उसका सारा श्रेय शास्त्रीजी महाराज को जाता है। गुरुहरि काकाजी महाराजने मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम का जयघोष करके एकता की बात सहज ही समझाई। तो हे भरतभाई, हमारे इन्द्रिय-अंतःकरण आपके चरणों में हमने रख दिये है, आप उसपर शासन करना वही प्रार्थना।



प.भ. विशालभाई बिरादर ने कहा कि औरंगाबाद में प.भ. नरेशभाई मूले द्वारा में पहलीबार सत्संग में आया। उससे पहले में नास्तिक जैसा ही था। भरतभाई को पहलीबार देखा तो मानने में नहीं आ रहा था कि ये कोई बडे संतपुरुष है। धीरे धीरे सत्संग में आगे बढा और यहाँ पवई मंदिर में आया तो भगवान के तथा ऐसे संतभाईयों के दर्शन कैसे करना वह सीखा। मुझे जब भी कोई परेशानी आती तो मैं भरतभाई से सब बात करता। उनको एकबार बता दे तो सहज ही अंतर में शांति हो जाती थी। वह प्रत्यक्ष अनुभव मैंने किया। भरतभाई ऐसे संत है कि पल में हमारी सारी तकलीफ दूर कर सकते है लेकिन वे हमें हमेशा धुन का सहारा लेने की रीत सीखाते है। जिससे



सचमुच कभी भी मंदिर का कार्य हो या कोई अन्य बात हो मैं केवल धुन करता हूँ तो सहज ही काम हो जाता है। अंत में उन्होंने 'काका मेरी भक्ति में, पेदा वो असर कर दो' भजन की पंक्ति सुनाकर अपनी प्रार्थना भरतभाई के चरणों में रखी।

प.भ. नरेशभाई मूले ने कहा कि भरतभाईने दिनकरभाई और वशीभाई को हार पहनाया और उन्हें दंडवत किया। साथ ही सभी भाईयों को भी प्रणाम किया। यह नजारा देखकर सभी की आँखों में अश्रु आ गये कि उनका दासत्वभाव अद्भुत है। यह मंच पर जो स्वरूपों विराजमान है वह धीरज रखकर आध्यात्मिकता में हमारी गति आगे बढा रहे है। इन्हें पहचानने का एक ही तरिका है कि खुद अनुभव करें। भरतभाई जब भी प्रवचन करते है तो जो जहाँ भी बैठकर वह सुनता है उसे यही महसूस होता है कि उसे उसके सवाल का जवाब मिल गया है। ऐसे दिव्य दर्शन हर किसीको उनमें सहज ही होता है। तो हे भरतभाई! हमारा कुछ भी बाकी रह जाता हो उसे आप पूरा करवा देना और आप जो हमें सुख देना चाहते है उस प्रकार हम जीवन जी पाये तथा ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करते हो जाये वही प्रार्थना।



प.भ. प्रवीणभाई लाड ने कहा कि भगवान स्वामिनारायणने वच.ग.म. १३ में स्वरूप की बात की है। आज यहाँ वह स्वरूप की बात साक्षात् दिखाई दे रही है। यहाँ अक्षरधाम ही खडा हुआ है। गुरुहरि काकाजी, प.पू. कांतिकाका एक हो गये तो अनंत ब्रह्मांड डोले। प्रत्यक्ष की पराभक्ति की जो बात फैलाई वह सत्य होते हुए दिखाई दे रही है। भरतभाई-वशीभाई एक सिक्के की दो पहलु है। वे काकाजीरूप होकर जीवन जीते है। परस्पर महिमा समझेंगे तो पाँचवी कसर भी टल जायेगी। इस दिव्य देही दरबार में उसका दर्शन हो रहा है। तो हम मूर्ति का सुख लेते रहे और एकदूसरे का महिमा समझें वही प्रार्थना।

उसके बाद संभाजी नगर (औरंगाबाद) के युवकोंने विशिष्ट भावनृत्य प्रस्तुत किया।

उसके बाद पवई मंदिर की सभी बहनों का भाभीओंने शाल-हार पहनाकर सन्मान किया। साथ ही सभी संतबहनोंने भजन द्वारा अपनी प्रार्थना भरतभाई के चरणों में रखी।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai

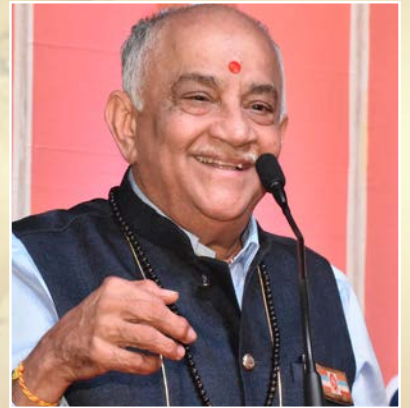




पू. कृपाबहन ने सभी संतबहनों का विशिष्ट महिमागान किया। उन्होंने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज स्वधाम पधारे उसके बाद योगिनीबहन से लेकर अभी जो हम बहनें पवई में भगवान भज रही है उसके पीछे भरतभाईने बहुत परिश्रम किया है। उन्होंने हमारे लिये इतना सहन किया कि हम बया नहीं कर सकते। तो उनको जितना धन्यवाद दे उतना कम है। भरतभाई के दर्शन हमें स्त्री-पुरुषभाव से नहीं करना है, वे उससे भी पर है। अमरिका में जब काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी मनाई थी तब सभी स्वरूपों के प्रवचन का Interview लिया गया था। उसमें भरतभाईने कहा था कि मेरा ये सपना है कि यहाँ जो बहनें भगवान भज रही है वह आनंद से भगवान भजे। तो उनके अमृतपर्व तक हमें उनका ये सपना साकार करना है। जब पवई मंदिर का Project पूरा हो जाये तब तक हमारे अंतर में भी हमारी नींव दृढ हो जाये यही भरतभाई के चरणों में प्रार्थना।



प.पू. वशीभाई ने कहा कि सभी युवकोंने बहुत अच्छे से सारी व्यवस्था की। वापी, औरंगाबाद के हरिभक्तों बस लेकर खास आये उसके लिये धन्यवाद है। हम जिसे भी भगवान मानते है उसे अगर हमें धारण कर लेना हो तो उनमें तन्मय होकर जीना पडता है। गुणातीतानंदस्वामीने महाराज की इच्छा के मुताबिक ही जीवन जीया। आज हम ऐसी दुनिया में जी रहे है जहाँ Performance जरूरी है। वही गुणातीतानंदस्वामीने अपने जीवन में भगवान को धारण करके सभीको दिया। उसके बाद गुणातीतानंदस्वामी का राजीपा सभीको मिला लेकिन भगतजी महाराज, जागास्वामीजी और कृष्णजी अदाने यथार्थ पहचाना।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai

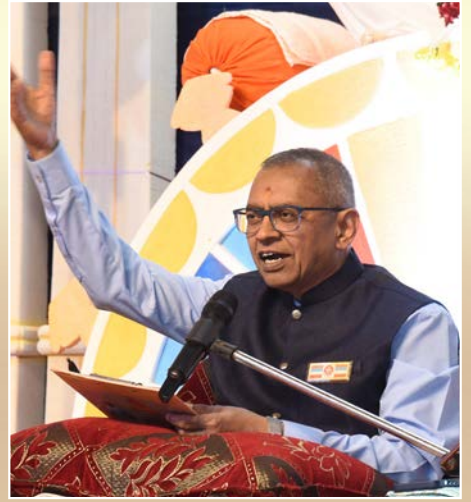
शास्त्रीजी महाराजने बहुत परिश्रम करके अक्षरपुरुषोत्तम उपसाना की बात, भगवान और भक्त की बात पृथ्वी पर रखी। गुरुहरि काकाजीने मुक्ताक्षर की बात समझाई। भरतभाई की विशेषता यह है कि उन्होंने काकाजी के साथ जो संबंध किया तो उनके तन्मय होकर जीवन जीया और आज भी जी रहे हैं। सुबह में तीन बात उन्होंने सभीको **Return Gift** में दी। **(१) सत्कर्म करो (२) धुन करो (३) सभीके गुणगान गाओ।** आध्यात्मिकता में भरतभाई की विशेषता यही है कि वे कठिन वस्तु को सरल कर देते हैं। गुरुजीने एक कार्ड में लिखा था कि अक्षरधाम की Currency भजन है। जैसे अपने देह और संबंधी के प्रति प्रीति है वैसे हमें सभी के साथ कुटुंबभाव रखकर जीवन जीना है। हम पवई के सभी संतभाईयों ५० साल से साथ हैं। दो सगे भाई भी साथ में नहीं रहते। तो हमारी जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। **Every success is a responsibility and every failure is a learning.** भरतभाईने कितनी बार कहा है कि वाणी में मीठाश रखे। होठ और मन हँसता रखे। हमें मन का छोड़कर भगवान को जो पसंद है वैसे जीवन जीना है। क्षमा क्या है? तो कोई आपको कुचल डाले फिर भी आप अपनी खुशबु ही फैलाओ वही क्षमा है। गुणातीतानंदस्वामीने बताया था कि हमारे यहाँ जो झाड़ू लगाये वही महंत है। वैसे हमें दास का दास बनकर जीना है। तो हमें देखकर हर कोई सोचे कि कैसे होंगे काकाजी, कैसे होंगे भरतभाई! ऐसा हमारा जीवन बने वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि जनवरी महिना शुरु होते ही भरतभाई का प्रागट्यदिन शुरु हो जाता है। भरतभाई एकदम सरल साधु है। गुरुहरि काकाजी को मिले तब पहली दृष्टि में ही उनसे प्रेम हो गया। भरतभाई-वशीभाई का संबंध सन् १९७२ के पहले से ही है। महेन्द्रबापुने कांदिवली में युवकों की सभा शुरु की थी तब हमें पवई के भाईयों की भेट मिली। काकाजी को साक्षात्कार हुआ तब योगीबापा की आज्ञा से बहनों के भगवान भजने का कार्य प्रारंभ हुआ। तो आज देखते हैं तो हर कार्य में बहनें बहुत आगे हैं। गुणातीत ज्योत, हरिधाम, सांकरदा, पवई, लंडन, अमरिका कई केन्द्रों में बहनें सहज ही भगवान भज रही हैं। काकाजी के इस कार्य को भरतभाईने आगे बढ़ाया। हम सभी भरतभाई के वचन के आगे झुक जाते हैं। आगे भी हम उनकी मर्जी के मुताबिक कार्य करेंगे लेकिन कभी-कभी हमारे मन के साथ लडाई होती है तब प्रसंग खडा होता है। हमारा काम हो जाता है तो हम मानते हैं कि भरतभाईने अच्छा किया। लेकिन वह हमारी KG लेवल की परीक्षा है। Ph.D. लेवल में वे हमारी मनमानी तोड़े, हमारा काम न हो तो भी हम दिव्य मानेंगे कि वो मेरे भले के लिये है, ऐसा मानना है। लेकिन भरतभाई ऐसा नहीं करेंगे, हमारा सब काम होने ही वाला है। हमारा मन-बुद्धि भरतभाई को समर्पित होकर जीवन जीयेंगे तो हमारा सब अच्छा ही होगा। भरतभाई का प्रागट्यदिन शास्त्रीजी महाराज के प्रागट्यदिन दिन के साथ आता है इसलिये काकाजी का विशेष राजीपा उनपर है। काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी एक ही थे। तो एकता हमें बहुत आगे लेकर जाती है। तो हमारे मित्रों, परिवार के साथ हमें ऐसी एकता करनी है, तो सुहृदभाव हमारे अंदर दृढ होगा। भरतभाईने तीन बात बताई है उसप्रकार हम जीवन जीयेंगे तो हमारी प्रगति होगी। तो हम हमारे



मन को मित्र न बनाये लेकिन भरतभाई-वशीभाई जैसे संत, उनके संबंधवालों को मित्र बनाये। तो इसी देह में हम ब्रह्मरूप का आनंद ले पायेंगे। गुणातीतानंदस्वामीने बताया है कि हमारा जन्म दो बात दृढ करने हुआ है। **(१) ब्रह्मरूप होना (२) परब्रह्म की भक्ति करनी।** ब्रह्मरूप होने में जो भी बीच में आता है उसमें से बडेपुरुष जल्दी बाहर निकालकर गुणातीत बनायेंगे। वह बनने की तैयारी हमें रखनी है और ईमानदारी से वो कहे ऐसा करना है। उसके लिये रात को प्रायश्चितरूप प्रार्थना अवश्य करनी है। तो हम गुणातीत पुरुषों को राजी कर ले और इसी देह में ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति कर पाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि सभीने बहुत अच्छी अच्छी बातें की। मैं काकाजी के संपर्क आया तो पहलीबार में ही Love at first sight हो गया। वो प्रेम होना यानि काकाजी अच्छे लगने लगे। केवल उनका नाम भी कोई बोले तो अंतर में आनंद छा जाता है। प्रेम था तो काकाजी के सभी संबंधवाले सहज ही दिव्य मानने में आ जाते। काकाजी सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी अपना ही मानकर उसकी बातें सुनते थे। काकाजी को मैं मिला तब एक बात अंतर में दृढ़ हो गई कि मैं काकाजी का हूँ और काकाजी मेरे है। मैंने काकाजी को कभी पूछा नहीं कि मैं आपके साथ पधरामणी में आ सकता हूँ? जो भी करना होता तो वे सामने से मुझे बोलते थे। मैं नौकरी करता था तब गुरुवार को मुझे छुट्टी होती थी। तो शिबिर के लिये वे मुझे उस दिन साथ में लेकर जाते थे। रात को देर तक सभा चलती तब सबको नींद आती थी। तो काकाजी कहते थे कि मैं यहाँ करोड़ों की बातें कर रहा हूँ और आपको नींद आ रही है? शुक्रवार को सुबह मुझे वे कहते थे कि तुम जल्दी निकल जाना और ऑफिस में बोल देना कि मैं आधा घंटा देरी से आऊँगा। हर टाइम को ऐसा नहीं बोल सकते, लेकिन काकाजीने बोला वह हर बात दिव्य मानकर करते तो कभी भी कुछ तकलीफ नहीं हुई। तो ये भी काकाजी की लीला में आनंद आता था।



प्रेम हो तो वो जो कहे, करवाये वो सब अच्छा लगता है। जब भी हम बड़े सत्पुरुष के पास रहे तब निर्विचार होकर रहना चाहिए। हमें केवल मूर्ति में रहना है और उनकी प्रेरणा के मुताबिक जीना चाहिए। काकाजीने इतनी कृपा की कि भजन, कथावार्ता सब करने के लिये ज्यादा प्रयत्न नहीं करना पडा, सहज ही सब हो गया। तो किसीको कोई भी तकलीफ है या कोई भी दुःख है तो वो हमें हमारे स्वभाव की वजह से है। हमें हमारा स्वभाव छोडना पडेगा, छोडगा पडेगा और छोडना ही पडेगा। महाराज कहते है कि जब तक हमारा स्वभाव है तो हमें दुःख देता है, लेकिन उसके कारण हम अन्यो को भी दुःखी कर देते है। काकाजी को मैंने एकबार पूछा था कि आप बहुत समर्थ हो, आपके पास बहुत शक्ति है तो सभीका दुःख दूर कर दो। तो काकाजी कहते थे कि आपको दुःखी होने की जरूरत नहीं है। भजन करो। जो भी कोई दुःखी है वो अपने स्वभाव के कारण दुःखी है। तो हम वह छोडकर हमारे गुणातीत स्वरुपों को राजी कर ले। दो जन की क्रिया और स्वभाव पसंद करेंगे तो हम स्वभावरहित हो जायेंगे। हमने कभी कुछ नक्की किया होगा तब ऐसा प्रसंग बनता है कि सबकुछ अस्तव्यस्त हो जाता है। तब यह सोचना चाहिए कि भगवान परीक्षा ले रहे है, उससे हार नहीं जाना है। काकाजी के समय से जो भी भक्तों जुडे वो आज भी उसी प्रकार सत्संग में आगे बढे रहे है। तो सभी हमेशा सुखी रहे वही प्रार्थना।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai

दिल्ली से प.पू. गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा कि दि. ३१ जनवरी नजदिक आते ही गुरुहरि काकाजी के आशीर्वचन कानों में गूँज उठते हैं कि भरतभाई का जन्मदिन उनके Happiest Day में से एक है। काकाजी का Happiest Day यानि हम सभीका Happiest Day. स्थिरता, समता, धैर्य जैसे गुणों के धारक यानि भरतभाई। संबंधवाले मुक्तों के जीवन को काकाजीमय बनाकर Happy Happy करने का अद्भुत कार्य किया। काकाजी की जीवनशैली को अपनाकर भरतभाई-वशीभाई सर्वदेशीयता के सिद्धांत से स्वयं जीकर साथीओं को ऐसी कवायत दे रहे हैं। हम दुबई विचरण करने गये थे तब अनिलभाई साहोर के वहाँ पधरामणी के लिये गये थे। उन्होंने भाव से संतों, भक्तों का स्वागत, सत्कार किया जैसे उनके लिये भरतभाई-वशीभाई ही पधारे हो। यह देखकर मेरे मन में हुआ कि ऐसा सिंचन से इन योगेश्वरों पर काकाजी कितने खुश होते होंगे? काकाजी को बृहद गुणातीत समाज में यही कराना था। भरतभाई हर प्रसंग में भजन का सहारा तो लेते ही हैं लेकिन अन्यो को भी भजन की तालीम देकर प्रभु को जीवन में आगे रखने सीखाते हैं। काकाजी हमेशा कहते थे कि अमारो भरत मन वगरनो छे... भरतभाई केवल स्वरुपों के पास ही नहीं, लेकिन हरिभक्तों के पास भी अपने मन को गिने बिना जीवन जीये है और जी रहे है। उसका परिणाम पवई से जुडा सत्संग समाज है। काकाजी की वे अद्भुत पहचान है। तो वर्षों तक वे निरामय रहकर सर्वप्रकार से मुक्तों की परवरिश करते हुए उन्हें प्रभु की मूर्ति का शाश्वत सुख बख्शिष में देकर निहाल करते रहे वही प्रार्थना।



युवकोंने भरतभाई के जीवन पर आधारित उन्हें बताये मुख्य सूत्रों पर छोटे छोटे संवाद प्रस्तुत किये। जिसमें प.भ. मनाक्षभाई आहिर, प.भ. कार्तिकभाई डोंगरे और प.भ. ओम्भाई मोहितेने अदाकारी की और पेरिस से आये हुए प.भ. जारस्मीनभाईने सभी संवाद तैयार किये तथा दिग्दर्शन भी किया।

युवकोंने भरतभाई के जीवन पर आधारित उन्हें बताये मुख्य सूत्रों पर छोटे छोटे संवाद प्रस्तुत किये। जिसमें प.भ. मनाक्षभाई आहिर, प.भ. कार्तिकभाई डोंगरे और प.भ. ओम्भाई मोहितेने अदाकारी की और पेरिस से आये हुए प.भ. जारस्मीनभाईने सभी संवाद तैयार किये तथा दिग्दर्शन भी किया।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Powai





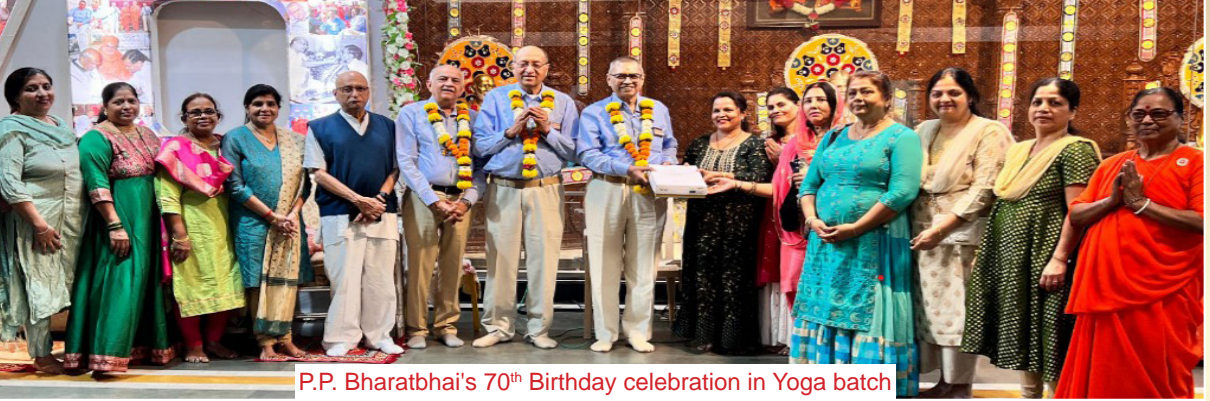
उसके बाद सभी मंडल की ओर से भरतभाई को भेट तथा पुष्पहार अर्पण हुए।

पवई मंडल की संतबहनों द्वारा बनाया गया विशिष्ट हार और मुगत संतभाईयों और गृहस्थ हरिभक्तोंने भरतभाई को पहनाया। तभी मंच पर सुशोभन किया गया दिव्य देही दरबार का दृश्य सभीके हृदय में अंकित हो गया। गुरुहरि काकाजी को भी इसी तरह उनके हीरक महोत्सव में हार पहनाया था वह दृश्य की स्मृति कई भक्तों को हुई।

प.भ. संकेतभाई मेघानंदने कुशलतापूर्वक सभा संचालन की सेवा की और

सभी युवकोंने पूरे समये की व्यवस्था बहुत ही भक्तिभाव से की। अंत में केक कटिंग द्वारा इस भव्य उत्सव की पूर्णाहुति हुई।

* बुधवार, दि. ३१ जनवरी की सुबह प.पू. भरतभाई का प्रागट्यदिन प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार और Yoga के तीनों बेच के सभी विद्यार्थीओं तथा पवई के संतभाईयों, संतबहनों और स्थानिक हरिभक्तोंने केक कटिंग के साथ आनंदोत्सव से मनाया।



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration in Yoga batch



P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at "Akshardham" Temple, Powai

सुबह में ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज तथा भरतभाई के प्रागट्यदिन निमित्त विशिष्ट महापूजा हुई। उसके साथ सभी संतबहनों द्वारा विशिष्ट हार भरतभाई को अर्पण हुआ।

शाम की सभा में माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. मयुरीबहन डोंगरे, प.भ. दीपकभाई जहागीरदार, प.भ. संकेतभाई मेघानंद, प.भ. प्रसादभाई पाटीलने भरतभाई के गुणों का दर्शन कराया।

पू. माधुरीबहन ने कहा कि आज हम शास्त्रीजी महाराज का भी प्रागट्यदिन मना रहे है। तारदेव में कांतिकाका के घर में शास्त्रीजी महाराज की विशिष्ट मूर्ति रखी है। गुरुहरि काकाजी महाराज हमेशा हमें वहाँ जाये तो वह मूर्ति के दर्शन करने की आज्ञा करते थे।



भरतभाई मन बगैर के साधु है। पहले बच्चों की शिबिर होती थी उसमें वे बहुत आनंद करते थे। वे एकदम सहज होकर जीवन जीते है। उनको किसी भी बात का स्वार्थ नहीं है। काकाजी को मैत्रीभाव बहुत पसंद था। ऐसी मैत्री भरतभाई-वशीभाईने की है। गुरुजी हमेशा कहते है कि जब भी आप भरतभाई के पास जाओ तो ऐसा मानकर जाना कि आप काकाजी के पास ही जा रहे हो। तो आपको सहज में जवाब मिल जायेगा। उन्होंने हमारे स्वभाव-प्रकृति देखे बिना हमें ग्रहण किया उसके लिये उनको धन्यवाद देते है। हम कथावार्ता बहुत करते है, सुनते है लेकिन जब तक वर्तन में नहीं आयेगा तब तक कोई फायदा नहीं है। तो हम हमारे स्वभाव से उनको कभी भी नाराज ना करें। तो हम हमारा बचपना छोडे और गुणातीत भावनावाले साधु बन जाये वही प्रार्थना।

दिल्ली से प.पू. आनंदीदीदी ने कहा कि स्थूल स्वरूप से गुरु के जाने के बाद जो समाज खडा हुआ है वो थोडा कमजोर सा पड जाता है। लेकिन हमारा संप्रदाय अखंड सौभाग्यवंता कहा जाता है। जिसकी ज्योति कभी बूझी ही नहीं। उस प्रकार गुरुजी, दिनकरभाई, महेन्द्रबापु, भरतभाई, वशीभाई और सभीने अपने गुरु गुरुहरि काकाजी महाराज को आज भी प्रगट ही रखा है। काकाजी हमेशा कहते थे कि हमें कौन मिला है? उसका हमें कितना केफ होना चाहिए? तो हमें तो गुणातीत स्वरूप सहज में मिले है तो उनकी मस्ती में हमें रत रहना चाहिए।

चंदन की लकडी कही भी रखी हो पर उसकी खुशबु अपनेआप दूर तक फैलती है। उसी प्रकार भरतभाई-वशीभाई जहाँ भी जाते है, जिसके भी साथ संबंध होता है तो उनके द्वारा काकाजी की खुशबु सहज ही फैला रहे है। वे दोनों बहुत बडे है फिर भी अपने दासभाव बिलकुल भी नहीं चुकते। स्वयं का अस्तित्व तक नहीं रखते। भरतभाई का जीवन हमें बहुत प्रेरणा देता है। सभीने स्वयं अनुभव भी किया है। अब उस अनुभव को हमें पकडकर रखना है। पप्पाजी कहते थे कि एक डायरी बनाकर अपने अनुभव लिखने चाहिए। सोना कभी भी सोना ही रहता है। अब हमें अनुभव तो हो गया है लेकिन जितना ज्यादा संबंध पक्का होगा तो स्वभाव-प्रकृति में परिवर्तन आयेगा। प्राप्ति का उत्साह अलग ही होता है। तो अब बिलकुल समय गवाये बिना इन स्वरूपों को तात्त्विक स्वरूप से पहचान ले और अपने जीवन को धन्य बनाये वही प्रार्थना।



विद्यानगर से गुणातीत प्रकाश के पू. इलेशभाई ने कहा कि भगवान में जोडने का कार्य एक सच्चा संत ही कर सकता है। ऐसे सच्चे संत यानि गुरुहरि काकाजी स्वरूप प.पू.भरतभाई हमें मुफ्त में मिले। मुफ्त में जो मिलता है उसकी कीमत नहीं होती। इसलिये हमें उनका माहात्म्य समझकर उनसे जुडे रहना है। महाराज से लेकर काकाजी तक पहुँचाने का सच्चा सुख हमें वे देना चाहते है तो उसे ग्रहण करना है। ये संतभाईयों हमारे लिये बहुत परिश्रम करते है। काकाजी



भरतभाई को भजनिक कहते थे। वो हमारे लिये भजन करते हैं इसलिये हम सुखी है। वे बहुत विचरण करते हैं। नये चैतन्य को आगे लेने हरपल कार्य करते रहते हैं। उन्होंने हमें पसंद किया है वह हमारा भाग्य है। तो भरतभाई, आप हम पर शासन करना और पवई मंदिर के Project में हम पूर्णरूप से जुड़े वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की जोड़ी अनोखी थी। अक्षरपुरुषोत्तम के लिये क्या न हो उसके लिये अद्भुत कार्य किया। दोनों की क्रिया बहुत अलग थी फिर लक्ष्य एक ही था। गुरुहरि काकाजी महाराजने बहुत कम समय में बहुत कुछ करके दिखाया। मैं भरतभाई को पहलीबार विद्यानगर में बालमंडल की शिबिर में मिला था। हम एक ही स्कूल में साथ में थे। सन् १९६८



से जो जुड़े वो आज ५६ साल से हम एकसाथ है। हमारी सब क्रिया अलग-अलग है। मैं CA, भरतभाई Engineer, मैं फटाफट काम करनेवाला, वे शांति से सब करते है। मैं सब बोल देता हूँ, वे कुछ बोलते नहीं। लेकिन काकाजी के साथ हमारी प्रीति थी उससे हम आज भी साथ है। काकाजी के बाद कांतिकाका के पास हम सब जुड़े थे। तो भरतभाईने कांतिकाका का भरोसा प्राप्त कर लिया था। वे ऑफिस जाते तो जाने से पहले हररोज कांतिकाका को मिलने के बाद ही जाते। हमारा लक्ष्य है कि हमें हमारे सत्पुरुष को राजी करना है, उससे कभी भी नजर नहीं हटनी चाहिए। तो काकाजी राजी हो ऐसा हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि गुणातीतानंदस्वामीने प्र.४ की १४०वीं बात में कहा है कि भगवान के भक्त की महिमा-गुण गाते रहना; उससे जीव ब्रह्मरूप हो जाता है...। योगीजी महाराज का ६०वाँ प्रागत्यदिन पहलीबार गुरुहरि काकाजीने मनाया था। आज सभी केन्द्रों में स्वरूपों का प्रागत्यदिन हर साल आनंदपूर्वक मनाया जाता है। काकाजी के ४ Happiest Days थे। (१) शास्त्रीजी महाराज चंदन अर्चा करके भेटे। (२) योगीजी महाराजने गोंडल में साक्षात्कार करवाया। (३) भरतभाई जैसे स्वरूप हमें मिले।



(४) योगीजी महाराजने गुणातीत समाज दिया। तो काकाजी आज बहुत राजी होंगे। भरतभाई जैसे गुणातीत स्वरूप के गुणों के हम गुणगान गाये और वो हमारे जीव में दृढ हो जाये, हम उसके लायक बने। सुबह में मैं प्रार्थना कर रहा था कि भरतभाई १०८ साल जिये और उस प्रागत्यदिन में मैं भी लाभ ले सकुं। लेकिन हमारी भावना यह है कि बड़ा सोचना है। जब हम १२५ का लक्ष्य रखेंगे तो हमारा शरीर भी उसके मुताबिक कार्यरत हो जायेगा। लेकिन महाराज अगर अभी लेने आये तो भी हमारी तैयारी है। तो हर किसीकी तबियत अच्छी रहे और हम हमेशा सकारात्मक भाव में रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी की स्मृतियाँ बहुत है, जितना डूबेंगे उतना आनंद मिलेगा। जितना हम दूसरों का दोष देखेंगे, उसमें नकारात्मक भाव से देखेंगे उतना प्रारब्ध लगेगा ही। हम मानते है कि हम गलत है, लेकिन सामनेवाला भी गलत है। तो प्रारब्ध तो दोनों को लगेगा। कोई बिमार होते है तो यहाँ आ के मुझे बोलते है कि मेरा ऐसा क्या प्रारब्ध है? तो हमें सोचना कि हमने खुद के स्वभाव से कितनी गडबड की है। हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो तो हम





कुछ भी करते है, कुछ भी बोलते है और अक्षरधाम में नहीं रहते। मेरी सभी से बिनती है कि ऐसा रहने से अच्छा की यहाँ मत रहो। शांति से रहो और अक्षरधामरुप बनो। सीधा कुछ भी नहीं है। महाराज की लकड़ी सबसे बडी है और वो जब गिरती है तो किसीको सुनाई नहीं देती। काकाजीने इतनी करुणा की है कि जरूरत के मुताबिक सभीको सेवक भी दिये है। लेकिन खुद को जो सहन करना है वो करना ही पडेगा। इसलिये हमें महिमा में ही रहना है। अमहिमा की बातों में बिलकुल नहीं जाना है। तो ही हम आगे प्रगति कर पायेंगे। तो हम हमारा अक्षरधाम गवा न दे और शांति से रहे वही प्रार्थना।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुई।

✽ शुक्रवार, दि. २ फरवरी को प.पू. वशीभाई और पू. अश्विनभाई Fireside chat of Business line की Conference में खास पधारे थे। ICICI के पूर्व अध्यक्ष श्री K.V. Kamathji से खास मिले। उनके साथ सत्संग की कई बातें की। साथ ही उन्होंने जो जानकारी दी उसे हमारे सत्संग में अमल में ला सके ऐसी माहिती प्राप्त हुई। उसके बाद योगी डिवाइन् सोसायटी की ओर से वशीभाईने उन्हें शाल और स्मृतिभेट अर्पण की।



With Former Chairman of ICICI Shri. K.V. Kamathji at Fireside chat of Business line Conference

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના ૭૩મા સાક્ષાત્કારપર્વે

પ્રભાચક્રનો પ્રભાવ...!

પર્વો પહેલાં તારદેવ મંદિરે ગુરુહરિ કાકાજી કોઈની બીમારી વિશે ચર્ચા કરી રહ્યા હતા. ત્યારે મુંબઈમાં કાંઈક Viral Infection જેવી સામાન્ય બીમારી ઘણાં બધાંને થતી હતી. કાકાજીને આ બાબત કોઈકે પૂછ્યું, ‘કાકાજી, આપને આવી બીમારી થતી નથી. આપ હંમેશાં સ્વસ્થ, તંદુરસ્ત જ રહો છો તેનું કારણ શું છે?’ ત્યારે કાકાજીએ કહ્યું કે ‘હું બીમારીને મારા પ્રભાચક્રમાં પ્રવેશવા જ નથી દેતો. તેથી તે મારાથી હંમેશાં દૂર જ રહે છે!’

તે વખતે તો આ વાત સહુએ સહજાવસ્થામાં જ સાંભળી લીધી, પણ એ બાબતનો જરા ઊંડાણથી વિચાર કરીએ તો ખ્યાલ આવે કે ગુણાતીત પુરુષો માટે એ વાત કેટલી સહજ છે! તેમના સંકલ્પનો પ્રભાવ જ એટલો બધો પ્રબળ હોય છે કે કોઈપણ બીમારી તો શું કોઈ નકારાત્મક વિચાર પણ તેમને અસર કરી શકે નહીં. એ તો ઠીક પણ સકારાત્મક વિચારશક્તિ એ કક્ષાએ તેમણે આત્મસાત કરી હોય છે કે આપણે જો તેમના શબ્દોને વ્યવસ્થિત રીતે અમલમાં મૂકીએ તો આપણને પણ તેની સવળી અસરનો પ્રભાવ અનુભવવા મળે. એથીય આગળ તેમની વિચાર-વાણીનો પ્રભાવ એટલો ધારદાર હોય કે પોતે તો ઠીક પણ તેઓ જેમને આશીર્વાદ-વરદાન આપે તો તે ૧૦૦ ટકા સાચા પડે જ!

ઈ.સ. ૧૯૯૨માં હરિદ્યામ ખાતે જ્યારે ‘યોગી શતાબ્દી’નો સમૈયો થયો ત્યારે હરિદ્યામના મુખ્ય દરવાજે એક સુંદર દૃશ્ય ગોઠવવામાં આવ્યું હતું, જેમાં લોમસ ઋષિના આશ્રમમાં બધાં જ હિંસક અને અહિંસક પ્રાણીઓ જેવાં કે વાઘ, સિંહ, ચિત્તો કે ગાય, બકરી, ઘોડો વગેરે એક જ ઝરામાંથી એક સમયે સાથે જ પાણી પીતાં હતાં અને ત્યાં એવું લખાણ મૂક્યું હતું કે ‘સામાન્ય પ્રાણીઓ પણ જો લોમસ ઋષિના પ્રભાવથી પોતાની હિંસક વૃત્તિઓ છોડી સંપીને રહી શકતા હોય તો આપણે તો મનુષ્ય છીએ. તો ગુણાતીત બાગમાં સહુ, ગુણાતીત સત્પુરુષોના આશ્રમમાં સંપીને કેમ ન રહી શકીએ?’ આ વાતનો જરા વિચાર કરીએ તો લાગે કે એ ઋષિનો પ્રભાવ કેવો હશે કે એમના આશ્રમમાં કોઈની પણ કુદરતી રીતે હિંસક વૃત્તિનો પ્રભાવ કારગત ન નીવડે!



આ જ વાતને વધુ વિચારીને જોઈએ તો મૂળ અક્ષરમૂર્તિ સદ્ગુરુ ગુણાતીતાનંદસ્વામીની પ્રકરણ ૪થાની ૧૪૦મી વાતમાં કહ્યું છે કે ‘ભગવાનના ભક્તના ગુણ કહેવા; તેમાંથી જીવ બ્રહ્મરૂપ થઈ જાય, ને એમાં દાખડો કાંઈપણ ન મળે એમ કરવાનું કહ્યું, પણ ફલાણો આવો ને ફલાણો આવો, એમ ભગવાનના ભક્તના દોષ ન કહેવા ને તેનું આપણે શું કામ છે? ને કોઈને નહીં સમજાતું હોય તો વળી આગળ સમજાશે; તેની શી ઉતાવળ છે? ને ક્યાં ભાગી જાય એમ છે? પણ કોઈના દોષ ન કહેવા. તેમાં લવા ને બાદશાહની દાઢીનું દષ્ટાંત દીધું, તે મુખ્ય માથે લેવું.’ આ વાત પરથી ખ્યાલ આવે કે સાદા ને સરળ શબ્દોમાં સહજ રીતે કેટલી મૂલ્યવાન વાતને તેમણે સમજાવી છે! એમણે કહ્યું છે કે (૧) ભગવાનના ભક્તના ગુણ કહેવા (૨) તેનાથી જીવ બ્રહ્મરૂપ થઈ જાય અને તે સ્થિતિ ટકી રહે તે માટે (૩) કોઈનાય અવગુણ ન કહેવા (૪) તેનું આપણે શું કામ છે? આમ આ ચારેય મુદ્દાને જો ધ્યાનમાં રાખી લઈ મંડીશું તો બ્રહ્મરૂપપાણનું અતિ ઊંચું લક્ષ પણ સહજતાથી પ્રાપ્ત કરી શકીએ એટલો એ વાતનો પ્રબળ પ્રભાવ છે.

શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનના જીવનનો એક અદ્ભુત પ્રસંગ છે, જે આપણે જાણીએ જ છીએ. એક વખત દુર્વાસા ઋષિને થાળ જમાડવા ગોપીઓ ગઈ ત્યારે ચમુના નદીમાં પૂર આવ્યાં હતાં. તે વખતે શ્રીકૃષ્ણે ગોપીઓને કહ્યું કે ‘ચમુનાજીને કહેજો કે કૃષ્ણ જો સદા બાળબ્રહ્મચારી હોય તો માર્ગ દેજો.’ ગોપીઓએ તેમ કર્યું અને ચમુનાજીએ માર્ગ આપ્યો અને તો નદીને સામે કાંઈ તેમણે દુર્વાસા મુનિને થાળ જમાડ્યો. પણ પાછા વળતાં ફરી એ જ પ્રશ્ન થયો કે ‘નદીમાં પૂર છે તો શું કરીશું?’ ત્યારે દુર્વાસા મુનિને વાત કરતાં એમને કહ્યું કે ‘તમે કેવી રીતે આવ્યાં હતાં?’ ત્યારે ગોપીઓએ કહ્યું કે ‘કૃષ્ણ ભગવાને કહ્યું હતું કે ચમુનાજીને કહેજો કે જો કૃષ્ણ સદા બાળબ્રહ્મચારી હોય તો માર્ગ દેજો અને આમ ચમુનાજીએ માર્ગ કરી આપ્યો હતો.’ તે સાંભળી દુર્વાસા ઋષિએ કહ્યું કે ‘હવે પાછાં જાઓ ત્યારે ચમુનાજીને કહેજો કે જો દુર્વાસા સદા ઉપવાસી હોય તો માર્ગ દેજો.’ ગોપીઓ આ સાંભળી પૂર્વવત્ આશ્ચર્યમાં ગરકાવ થઈ ગઈ કે હજુ હમણાં જ અમારી સામે દુર્વાસા ઋષિ આટલો થાળ જમાડ્યો તો સદા ઉપવાસી કંઈ રીતે? પણ તેઓ વધુ વિચાર ન કરતાં ચમુનાજી આગળ જઈ દુર્વાસા મુનિએ જેમ કહ્યું તેમ ચમુનાજીને કહ્યું તો તરત એમને માટે માર્ગ થઈ ગયો. ગોપીઓએ આ બાબત શ્રીકૃષ્ણને પૂછ્યું ત્યારે એમણે કહ્યું કે ‘દુર્વાસા ઋષિ જમ્યા જ નથી, એમણે બધું જ ભગવાનને ઘરાવી દીધું છે.’ આમ ઉપરછલ્લી રીતે બન્ને ક્રિયાઓ વિપરીત લાગતી હતી, પણ તેની જો ભાવના ભગવાન તરફની હતી તો તેની ધારદાર અસર થઈ.

બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજે ‘સુનૃત’ના છેલ્લા મુદ્દામાં કહ્યું છે કે ‘કામ-ક્રોધના ઘાટ થાય ત્યારે જ્ઞાને કરીને દબાવી દેવા, જો ભૂંડો ઘાટ કર્યો તો તારા ભૂંડા કરી નાખીશ. રાજનીતિનું વચનામૃત ગઢા મધ્ય ૧૨ વાંચવું. પછી એકપણ સંકલ્પ ન થાય.’

પત્રસંજીવની પુસ્તકમાં (પત્ર નં. ૨, પાનું.નં. ૧૯) ગુરુહરિ કાકાજીએ પોતાના વડીલ ભાઈ ગુરુહરિ પપ્પાજીને લખ્યું છે કે ‘મને ભય-

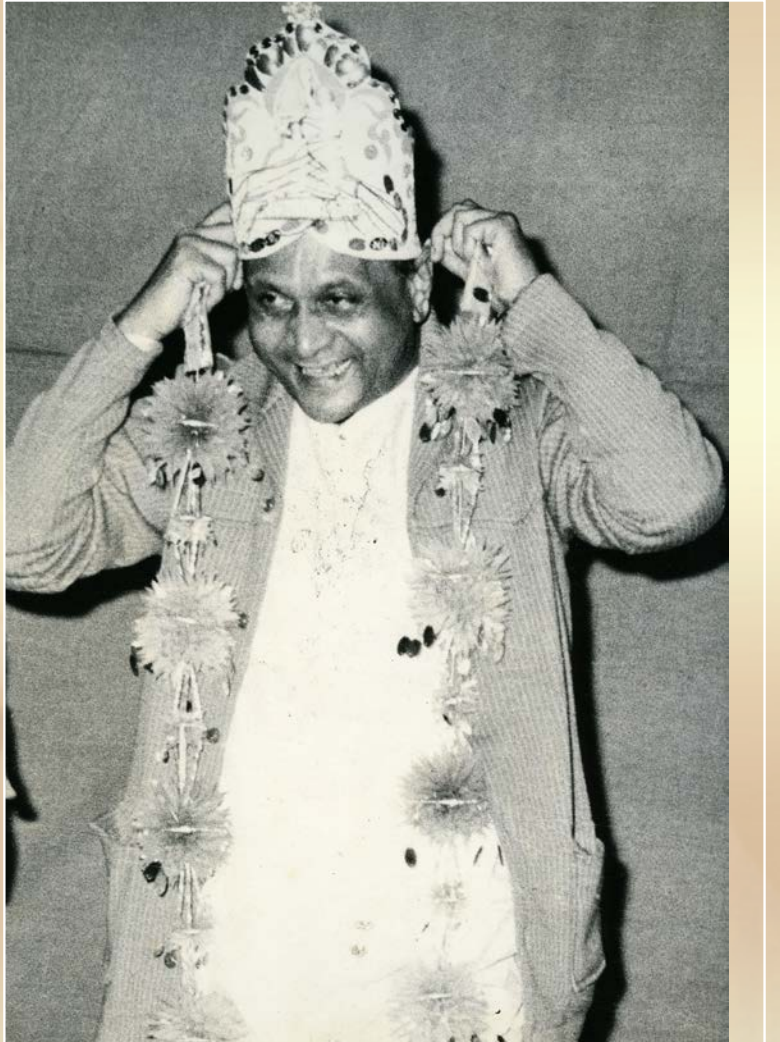


બીક હવે સતાવતાં નથી. મારી સામે Colorless થઈ જાય છે. કારણ હું તેની બરાબર સામે જાઉં છું.’ આપણે વિચાર કરીએ કે લગભગ ૩૨ વર્ષના એક યુવાનની કેવી ઉત્કૃષ્ટ સમજણ શક્તિ હશે અને તેની સંકલ્પ શક્તિમાં કેવી તાકાત હશે કે એમને કોઈપણ મુશ્કેલી, મુશ્કેલી જેવી લાગી જ નહીં હોય. એ તો ઠીક પણ કઠિન સંજોગો પણ તેમને માટે સાનુકૂળ થઈ જતા હશે! આવા તો કેટલાય પ્રસંગો તેમના જીવનમાં આવ્યા હતા. પણ તેઓએ હંમેશાં આવો જ સકારાત્મક અભિગમ અપનાવ્યો હતો તો કોઈપણ વિપરીત પરિબળ તેમને તેમના લક્ષ્યમાંથી ચલાયમાન કરી શક્યાં નહીં.

ઈ.સ. ૧૯૬૬માં જ્યારે સંતબહેનો વિધાનગરમાં રહેવા ગયાં ત્યારે ગુણાતીત જ્યોતનું બાંધકામ ચાલુ હતું. શરૂઆતનાં વર્ષોમાં વિધાનગર આજના જેવું વિકસિત નહોતું અને ઘણા માથાભારે તત્વોની હેરાનગતિ પણ હતી. પરંતુ પપ્પાજીએ એક્સરખું ભજન કર્યું હતું અને કરાવ્યું હતું, જેથી કરીને જગતની કોઈપણ માયા બહેનોને ભગવાન ભજવામાં કોઈપણ પ્રકારનો અંતરાય કે વિઘ્ન કરી શકી નહીં. પપ્પાજી તો કહેતા કે ‘ગુણાતીત જ્યોતની બહાર માયા ગમે તેટલી ફૂદતી હોય પરંતુ જ્યોતની અંદર તો માયા બિલકુલ આવી શકે નહીં.’ એનું કારણ એટલું જ હતું કે એમણે સકારાત્મકતાનું આવું જબરજસ્ત રક્ષાકવચ બહેનોની આજુબાજુ મૂકી દીધું હતું. વળી અનુપમ મિશનના ભાઈઓ પ.પૂ.ડૉ. સનંદભાઈ, પ.પૂ. વી.એસ.ની ઘાક પણ એવી હતી કે કોઈ અનિષ્ટ તત્વો જ્યોત તરફ ઈરકી શકે નહીં.

વર્ષો પહેલાં હિંદુસ્તાનમાં મહેશ યોગી કરીને બહુ મોટા યોગાચાર્ય થઈ ગયા, જેમણે T.M. (Transcendental Meditation)ની રીત શીખવાડી હતી અને અમેરિકામાં તેમના ઘણા બધા અનુયાયીઓ પણ હતા. તે સહુએ આ T.M.ની મદદથી એવું વાતાવરણ ઊભું કર્યું હતું કે મહેશ યોગીના આશ્રમની લગભગ ૧૦૦ કિલોમીટરના પરિસરમાં ગુનાહખોરીનું પ્રમાણ ખૂબ જ ઘટી ગયું હતું!

વર્ષો પહેલાં ગુરુહરિ કાકાજીને એક વખત પ.ભ. વિજયભાઈ શેઠીયા નામના હરિભક્ત મુંબઈમાં ચોપાટી પાસે આવેલા પ્રાણસુખલાલ મસ્તલાલ Bathમાં તરવા માટે લઈ ગયા હતા. લૌકિક રીતે તો કાકાજીને તરતાં આવડતું નહોતું. તે વખતે તેમણે રબરની રીંગ કે લાકડાની મદદ લીધી પણ એ પછી તેમણે Auto Suggestionની એક અત્યંત મહત્વની તરકીબ અપનાવી હતી. જેમાં આગલે દિવસે પોતાની જાતને Auto Suggestion કરીને પોતાને વ્યવસ્થિત તરતાં આવડે છે એ રીતની પોતાના સમગ્ર ચેતનાતંત્રને તાલીમ આપીને તે સરસ રીતે તરી શકે



છે એવી કલ્પના કરવાનું સહુને શીખવ્યું. એ પછી જ્યારે તરવા ગયા તો પહેલાં જેવો કોઈપણ જાતનો ખચકાટ કે ગભરામણ કોઈએ અનુભવ્યાં નહીં. એ જ વાતને આધ્યાત્મિક ઓપ આપીને તેઓ કહેતા કે ‘તમે ધૂન કર્યા પછી ત્રણ વખત પ્રાણાયામ કરો અને તેની સાથે સ્વામિનારાયણ મંત્રનું ઉચ્ચારણ કરો અને એવી ભાવના કરો તો તમને પણ કોઈપણ શારીરિક કે માનસિક બીમારી આવી શકે નહીં.’ એ જ પ્રયોગને આજે પણ પ.પૂ ભરતભાઈ દરરોજ સવારે ને સાંજે ધૂન કરાવ્યા બાદ કરાવે છે અને આપણે જો એનો મહિમા સમજી એને વ્યવસ્થિત રીતે કરીએ તો આપણને શારીરિક બીમારી અથવા માનસિક દોષો પજવી શકે નહીં.

સંતભગવંત સાહેબજીએ તો વર્ષોથી સહુને અદ્ભુત જીવનસૂત્ર આપ્યું છે કે "Think positive, rest will follow." અર્થાત્ સકારાત્મક વિચારસરણી રાખો, બીજું બધું જ એની જાતે થશે. ઉપરોક્ત Think positive શબ્દોમાં Negative એટલે કે કોઈપણ અભાવ, અવગુણ કે ખટપટની વાત કે એવું વર્તન ન કરવું એ અભિપ્રેત જ છે. આપું જીવન જીવીએ તો આપણી આજુબાજુ એવી વ્યક્તિઓ જ જોવા મળે જ્યાં કેવળ હરિભક્તોનો મહિમા અને બ્રહ્માનંદ જ હોય. સાહેબજીની આજુબાજુ આપું વાતાવરણ આપણે હંમેશાં જોઈએ જ છીએ.

પ.પૂ દિનકરભાઈનાં પત્ની પ.ભ. સુધાબેન ધામમાં ગયાં ત્યારપછી દિનકરભાઈએ કોઈપણ સ્ત્રીને ન અડવાનો નિયમ લીધો હતો. એ એવી તો કક્ષાએ એમણે પાકડો કર્યો હતો કે તેઓ ગમે ત્યાં વિચરણ કરે – વિમાનમાં કે ટ્રેનમાં તેમની બાજુની સીટ પર કોઈપણ મહિલાની સીટ આવતી જ નહીં અને કદાચ જો આવી જાય તો પણ હકારાત્મક સંજોગો જ ઊભા થાય. અમેરિકામાં બંદૂક સહુ કોઈને ખૂબ સહેલાઈથી મળી જાય છે અને એને લીધે ત્યાં ગુનાહખોરીનું પ્રમાણ પણ વધુ છે. વર્ષો પહેલાં કોઈ ભક્તે દિનકરભાઈને પૂછ્યું કે અહીં અમેરિકામાં ગમે ત્યારે કોઈપણ બંદૂક લઈ નિર્દોષને પણ પોતાના અલ્પ સ્વાર્થ માટે બંદૂકથી વીંધી નાખે છે. તમારા પર જો આવો પ્રસંગ આવે તો તમે શું કરો? ત્યારે દિનકરભાઈએ ખૂબ જ સહજતાથી કહ્યું હતું કે ‘સહુથી પહેલાં તો મારી સામે આવી કોઈ વ્યક્તિ આવી જ ન શકે અને કદાચ આવી ગઈ હોય તો પણ એના વિચારો બદલાઈ જ જાય!’ આમ દિનકરભાઈએ કઈ કક્ષાએ આવા સકારાત્મક અભિગમને આત્મસાત કર્યો હશે તે આપણા જેવી સામાન્ય વ્યક્તિની તો કલ્પનાની બહાર જ છે!

પ.પૂ ભરતભાઈએ તો તેમના પ્રાગટ્યદિન નિમિત્ત Return Gift તરીકે સહુને હરિભક્તોના દરરોજ ગુણ લખવા સૂચન કર્યું છે. જો આપણે પ્રામાણિકપણે આ સૂત્રને અપનાવીએ તો આપણને કોઈને માટે અભાવ-અવગુણનો વિચાર આવી જ ન શકે અને આપણું જીવન પણ મહિમાથી હર્ષભર્યું ને આનંદમય રહે.

હમણાં ત્રણેક વર્ષ પહેલાં કોરોનાની ગંભીર બીમારીએ સમગ્ર દુનિયાને હ્યમચાવી નાખી હતી. તેમાં પણ વૈજ્ઞાનિક પૃથ્થકરણમાં એવું તારણ નીકળ્યું હતું કે કોરોનાની બીમારી કરતાં તે બીમારીનો ભય વધુ ખતરનાક નીવડે છે. એથીય ઉલટું સકારાત્મક અભિગમ અને ભગવાનના ભજનનો જો આશરો લેવાય તો દવા કરતાં પણ દુવા વધારે અસરકારક નીવડે છે.

આવા તો કેટલાય પ્રસંગો અને દાખલાઓ છે જેને લખવા જઈએ તો પાર આવે એમ નથી અને તેના આલેખનમાં કેટલાય પાનાં ભરાય, પરંતુ મુખ્ય વાતને બરાબર સમજીને જીવનમાં ઉતારવાની છે.

હે સત્સંગી સ્વજનો! ગુરુહરિ કાકાજીએ બતાવેલ ઉપરોક્ત પ્રભાચક્રના પ્રભાવની રીત ખરેખર ખૂબ જ કારગત નીવડે એવી છે, જો તેનો યથાર્થ મહિમા સમજી યોગ્ય રીતે અમલમાં મૂકવામાં આવે તો! આ વાતના હાર્દને યથાર્થ સમજીને આપણે સહુ અમલમાં મૂકી એનો પૂરેપૂરો લાભ લઈ શકીએ એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો તથા ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજનાં ચરણે એમના ઉઝા સાક્ષાત્કાર દિને પ્રાર્થના...



બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીના પ્રાગટ્યપર્વે

દાસત્વ ને માહાત્મ્યની મૂર્તિ

– પ.પૂ. દાસસ્વામીજી (સાધુ યજ્ઞવલ્લભદાસ)

આગામી તા. ૧૫ ફેબ્રુઆરીએ ભગવત્સ્વરૂપ પ.પૂ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીનો ૮૯મો પ્રાગટ્યદિન આવી રહ્યો છે. તેની મંગલ સ્મૃતિમાં વર્ષો પહેલાં ઈ.સ. ૧૯૮૨માં ગુરુહરિ પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીએ પ.પૂ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીના એક પ્રાગટ્યપર્વે તેઓના પરમ કલ્યાણકારી દિવ્ય ગુણોનું માહાત્મ્યદર્શન કરાવ્યું છે તે વાંચી, મનન-ચિંતન કરી, સ્વાધ્યાય કરી આપણા જીવનમાં એ સાકાર થાય તેવી પ્રાર્થના સહ સુરુચિ સેવીએ!

આશિષ પ્રવચન : પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી, તા. ૧૫-૨-૧૯૮૨

મોટાપુરુષને માર્ગે ચાલીને રુચિ પ્રગટાવનારને મોટાપુરુષને શું ગમે છે તે જાણવાનો ખ્યાલ આવે તે માટે આજે આપણે સૌ અક્ષરવિહારીસ્વામીજીનો પ્રાગટ્યદિન ઉજવવા ભેગા થયા છીએ.

હું અને અક્ષરવિહારીસ્વામીજી – શરૂઆતથી જ અમે સાથે હતા. એમનું આખું અંગ વિશ્વાસનું. સ્વામીજી અનાદિના જ હતા, તેનાં મૂળભૂત લક્ષણ બે છે. અક્ષરધામના ગુણાતીત પુરુષનું લક્ષણ લૌકિક રીતે સામાન્ય દૃષ્ટિથી જોઈએ તો ખ્યાલ ન આવે, પણ બે લક્ષણનાં તેઓમાં સહેજે જ દર્શન થતાં, જેના ફળસ્વરૂપે ભગવાનના પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપ સાથેનો સંબંધ સ્હેજે જ દઢ થઈ ગયો.

સ્વામીજીના જીવનની આગવી વિશેષતા એ છે કે જ્યાં અહમ્ ત્યાં ડહાપણ છે, ત્યાં ભોળપણ છે, ત્યાં બીજા તરફ નજર રહે છે, પરંતુ જેટલો દાસત્વભાવ છે તેટલી જ પ્રભુ તરફ સ્હેજે જ નજર હોય જ. હું વર્ષોથી સ્વામીજીની સાથે રહું છું. સ્વામીજી મારી સાથે જ છે. તેઓ કંઈ બુદ્ધિ નથી કે અણસમજુ બાળક પણ નથી છતાંય એમનામાં સહજ ગુણ એ છે કે શરૂઆતથી જ જાણે કે અજાણે, ભાવે કે કભાવે, જ્ઞાને કે અજ્ઞાને કરીને કદાપિ તેમની વૃત્તિ કે નજર બીજે જવા દીધી નથી. કદાપિ કોઈપણ સંજોગોમાં પટલ થયા નથી. બાપાને શું ગમે છે? તેમ વિચારીને તેઓ બંધું કરી રહ્યા હતા, આ અનાદિ મહાપુરુષનું પહેલું લક્ષણ છે. કદાચ મનને ગુલામ બનાવે પણ બુદ્ધિને ન બનાવે. કદાચ બુદ્ધિને ગુલામ બનાવે પણ જાણપણાને ન બનાવે,



પરંતુ સ્વામીજીને તો સૌનુંય ગમે. સંપૂર્ણપણે દાસત્વભાવ, સ્વામીજીના જીવનની આવી વિશિષ્ટતા આપણા માટે પ્રેરણાત્મક છે. આપણે એ માર્ગે જ ચાલવાનું છે.

બીજી તેઓની મોટી વિશેષતા એ છે કે જે સમયે જે સ્વરૂપના યોગમાં રહ્યા છે તેમની સાથેની તેમની અપ્રતીમ વફાદારી દશ્યમાન થાય છે. સ્વામીજીને તો ક્યારેય પપ્પાજી કે કાકાજી કે બાપા વિશે સ્વપ્નમાંય સંકલ્પ ન ઊઠે. તેઓ જે કરી રહ્યા છે તે બરાબર જ છે એવા દિવ્યભાવની અદ્ભુત સમજણના તેઓએ તેમના ચૈતન્યને વિશે પાતાળે પાયા નાંખ્યા છે. આ સમજણ તે સામાન્ય સમજણ નથી. અક્ષરધામના દિવ્ય પુરુષની જ આ સમજણ હોઈ શકે. ભગવદી કે ભગવત્સ્વરૂપ સંત એ બેય આગળ તેઓની બુદ્ધિ કે મન સંકલ્પ-વિકલ્પ કે તર્ક-વિતર્ક કરવા અસમર્થ બન્યાં જેના ફળસ્વરૂપે આજે તેઓનું જીવન ભગવત્સ્વરૂપ બન્યું, બ્રહ્મસ્વરૂપ બન્યું, ગુણાતીતભાવવાળું બન્યું, ગ.પ્ર. કરના વચનામૃત પ્રમાણે પ્રભુના સંબંધવાળું બન્યું. આજે તેઓના સંતો પણ તૈયાર થઈ ગયા.

આજના શુભ મંગલકારી દિવસે આપણે તો એટલું જ કરવાનું છે કે સ્વામીજીનો માર્ગ અપનાવીએ અને અપ્રતીમ ભક્તિથી તેમની સાથેનો સંબંધ વધુ દઢ બને ને એ જ અંતરની પ્રાર્થના...!

(અક્ષરનાં તેજ ભાગ-૨)



અક્ષરધામ ગમન

પ.પૂ. બેરિસ્ટર સાહેબના હૂલામણા નામથી જાણીતા એવા અનુપમ મિશનના પરિષ્ઠ સંતભાઈ પ.પૂ. રમેશભાઈ રાવજીભાઈ પટેલ (ઉંમર - ૮૬) લાંબી માંદગી બાદ તા. ૨૨ જાન્યુઆરીએ સ્વધામ પધાર્યા.

મૂળ સોખડાના વતની એટલે બાળપણથી જ બેરિસ્ટર સાહેબની મૈત્રી સંતભગવંત સાહેબજી સાથે હતી. તેઓએ પ્રાથમિક અભ્યાસ પૂરો કર્યા પછી કલા ક્ષેત્રે શિક્ષણ લીધું અને ચિત્રકલામાં Diplomaનો અભ્યાસ પૂરો કર્યો. અભ્યાસ બાદ તેઓ Banners બનાવવાનું અને Paintingનું કામ કરતા હતા. ઈ.સ. ૧૯૫૬માં સોખડા ગામમાં એક પારાયણ વખતે બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજનાં પ્રથમ દર્શન થયાં હતાં. પણ તેઓ સ્વામિનારાયણ ધર્મથી વિશેષ પરિચિત નહતા. પરંતુ પૂર્વના જ મહામુક્ત હશે એટલે ઈ.સ. ૧૯૬૪માં વિધાનગરમાં અક્ષરપુરુષોત્તમ છાત્રાલયનું નિર્માણ કાર્ય શરૂ થયું ત્યારે સંતભગવંત સાહેબજીએ તેમને Banners અને Boards બનાવવા માટે વિધાનગર રહેવા બોલાવ્યા. તે વખતે તેઓ યોગીબાપાના વિશેષ પરિચયમાં આવ્યા અને એક વર્ષ સુધી સાહેબજીના સૂચનથી છાત્રાલયનાં બાંધકામની દેખરેખની સેવા કરી અને ત્યારબાદ પાછા સોખડા ગયા. પરંતુ એક વખત યોગીજી મહારાજે એક પ્રસંગે બોચાસણમાં એમને ટકોર



કરી કે 'તમે અહીં કેમ બેઠા છો? જશુભાઈ પાસે વિધાનગર પહોંચી જાઓ.' તેથી તેઓ ફરી વિધાનગર સાહેબજી પાસે આવ્યા અને જીવનપર્યંત એમની સાથે જ રહ્યા.

સાહેબજીએ કર્મયોગી સાઘકનું વ્રત આપ્યું અને તેમના આત્મસખાઓનો અદ્ભુત સાથ મળ્યો તો જીવનનો પ્રવાહ બદલાઈ ગયો અને યોગીજી મહારાજનો રાજીપો પ્રાપ્ત કરવો એ જ કેવળ જીવનનું લક્ષ્ય બની ગયું.

ઘીમે-ઘીમે સાહેબજી પ્રત્યેનો મિત્રભાવ એમનો મહિમા સમજાતાં ગુરુભાવમાં પરિવર્તિત થયો અને યોગીજી મહારાજે આપેલ આજ્ઞાપાલનમાં કે સાહેબજીએ ચિંધેલી સેવાઓને ખૂબ જ નિષ્ઠાપૂર્વક અદા કરવામાં જ એમને જીવનની ઇન્દ્રિય લાગી હોય એવું સહજ જીવન તેમનું બની ગયું. અસ્ખલિત માહાત્મ્યનિષ્ઠાથી છલકાતાં રમેશભાઈની સેવા પ્રત્યેની વફાદારી અને વિચક્ષણતાને કારણે તેઓ 'બેરિસ્ટર'ના હૂલામણા નામે જાણીતા થયા. ખૂબ જ નિખાલસ અને હંમેશાં સદાબહાર હસતાં રહેતા બેરિસ્ટર નાની-મોટી કોઈપણ સેવા કરવામાં જરાપણ સંકોચ ન રાખતા. પોતે સાહેબજીના પ્રથમ આત્મસખાઓમાં સ્થાન ધરાવતાં હોવા છતાં ગમે તેવી નીચી ટેલની સેવા પણ તેઓ ખૂબ જ અહોહોભાવ અને મહિમાથી કરતા. સાહેબજીના વચને જ્યોતનાં બાંધકામમાં, સંતબહેનોની સેવામાં અને સોખડા, સાંકરદા, દિલ્હી વગેરે સ્થાનોએ જ્યાં જેવી જરૂર પડી એ રીતે હંમેશાં સેવામાં પહોંચી જતા અને ત્યાંના સ્થાનિક વડીલો અને હરિભક્તો સાથે કોઈપણ જાતના ખચકાટ વગર બહુ જ સહજ રીતે રસબસ થઈ શકતા. તેમની આવી સર્વદેશીય સેવાથી ગુરુહરિ પપ્પાજી, પ.પૂ. સોનાબા અને સાહેબજીનો અદ્ભુત રાજીપો મેળવી લીધો. તેમની સેવાની એક લાક્ષણિકતા હતી કે ક્યાંય પણ કશું ખોટું ન થાય અને સ્થાનિક સંસ્થાને જરાપણ નુકસાન ન થાય તેની તેઓ હંમેશાં તકેદારી રાખતા.

વળી તેમના નિખાલસ સ્વભાવને લીધે તેઓ સહુના એવા માનીતા થઈ ગયા હતા કે હક્ક કરીને તેઓ સહુને ઘરે જતા અને બધી જગ્યાએ અક્ષરપુરુષોત્તમ ઉપાસના, યોગીજી મહારાજનો ઉપદેશ અને સાહેબજીના મહિમાની જ વાતો કરતા. છેલ્લા ૨૫થી પણ વધુ વર્ષથી તેઓને અનુપમ મિશનના અમેરિકાના કેન્દ્રની જવાબદારી સોંપાઈ હતી તો ત્યાં પણ વડીલ માવતર તરીકે સહુની ખૂબ જ માવજત કરી અને અત્યારે અનુપમ મિશનનો અમેરિકામાં જે અદ્ભુત વિકાસ થઈ રહ્યો છે તેના પાયામાં બેરિસ્ટર સાહેબની અજોડ સેવા અને સાચવણીનો ફાળો છે. જ્યારે જ્યારે શિકાગોથી પ.પૂ. દિનકરભાઈ અને હરિભક્તો તથા પવર્ણના સંતભાઈઓ અમેરિકા પધારતા ત્યારે તેમને સહુને બેરિસ્ટર સાહેબને મળી ખૂબ આપોષભાવ થતો અને બેરિસ્ટર સાહેબ પણ સહુને આત્મીય સ્વજનની જેમ સાચવતા. એ પહેલાં પણ ભારતમાં સૌરાષ્ટ્ર અને ગુજરાતનાં ગામોમાં સત્સંગ માટે તેઓ જતા અને ત્યાંના સહુ હરિભક્તોને સત્સંગની રીત, આજ્ઞાપાલન, મહિમા, નિષ્ઠા, સેવા વગેરેની સુંદર તાલીમ આપતા.

૮૬ વર્ષે સ્વાસ્થ્ય જરાક નબળું પડતાં તેઓ ભારત આવ્યા અને કુદરતી ઉપચાર કેન્દ્રમાં રહ્યા. પોતાની શારીરિક તકલીફો પ્રત્યે ખાસ ધ્યાન ન આપ્યું, પણ ધૂન-ભજન-પ્રાર્થનામાં જ રત રહ્યા. તા. ૨૨ જાન્યુઆરીએ અચાનક હૃદયનો હુમલો થયો અને તેઓએ મોગરીમાં છેલ્લા શ્વાસ લીધા. સમગ્ર સત્સંગ સમાજને તેમના જેવા સર્વદેશીય અને સદાબહાર અલમસ્ત સાધુ ગૂમાવ્યાનું ખૂબ જ દુઃખ થયું. તેમનું હાસ્ય ખૂબ જ વિલક્ષણ હતું અને તેઓ જ્યારે હસતા ત્યારે આજુબાજુના સહુ ભક્તોને એમના મુક્ત હાસ્યની છોળોમાં ભીંજવી દેતા.

તા. ૨૩ જાન્યુઆરીએ સવારે મોગરીમાં જ તેઓની અંત્યેષ્ટિ સંપન્ન થઈ ત્યારે અનુપમ મિશનના દેશ-પરદેશના હરિભક્તો, ગુણાતીત સમાજના સંતો, સંતબહેનો, સર્વે સંતભાઈઓ અને અનેક ભક્તોએ તેઓને ભાવભરી વિદાય આપી. તા. ૪થી ફેબ્રુઆરીએ તેઓની ત્રયોદશીની મહાપૂજામાં પણ ગુણાતીત સમાજના સહુ મુક્તોએ તેમને ભાવાંજલિ આપી ભક્તિઅર્ધ્ય અર્પણ કર્યો.



અક્ષરધામ ગમન

પ.પૂ. દેવીબહેન (ઉંમર - ૮૭)નાં નામે જેઓ સમગ્ર સત્સંગમાં સહુનાં માનીતાં થયાં એવાં ગુણાતીત જ્યોતનાં પ્રથમ ચાર પરિષ્ઠ સંતબહેનોમાંનાં એક એવાં પ.પૂ. લક્ષ્મીબહેન પટેલ મંગળવાર, તા. ૬ ફેબ્રુઆરી - બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજની સ્વધામગમન તિથિએ રાતે ૧૧ વાગે પોતાની આ લોકની લીલા સંકેલી અક્ષરધામ સિધાવ્યાં.

ઈ.સ. ૧૯૫૮માં તારદેવ મંદિરે ગુરુહરિ કાકાજી, ગુરુહરિ પપ્પાજી અને પ.પૂ. સોનાબાની છત્રછાયામાં ભગવાન ભજતાં પ.પૂ. તારાબહેન, પ.પૂ. જ્યોતિબહેન, પ.પૂ. હંસાદીદી સાથે દેવીબહેન પણ જોડાયાં અને એ રીતે બહેનોના ભગવાન ભજવાનાં રથને ગતિ મળી. ખૂબ જ કુશાગ્ર બુદ્ધિ અને વિલક્ષણ સમજણ હોવા છતાં તેઓ સહુનાં દાસ બનીને જ રહ્યાં. વડીલનો અભ્યાસ કર્યો હોવાથી ખૂબ જ સહજ રીતે સામી વ્યક્તિને કે સંજોગોને પોતાની આવડતથી ચથાર્થ પારખી શકવાની વિચક્ષણ બુદ્ધિને તાળું મારી એ ત્રણેય બહેનોને સાધનામાર્ગે અદ્ભુત સાથ આપ્યો. પપ્પાજીને પ્રત્યક્ષ પ્રભુ તરીકે સ્વીકાર્યા અને હરેક પ્રસંગે નિર્દોષબુદ્ધિ અને દિવ્યભાવ રાખી તેમના જ ગમતાં મૂજબ વર્ત્યા. શરૂઆતમાં ઘણી તકલીફો આવી પણ તેમણે હંમેશાં પોતાની સવળી સમજણથી દરેક પ્રસંગને પ્રભુનો પ્રસાદ માની સ્વીકાર્યો અને બધામાંથી સહજતાથી પસાર થઈ ગયાં.



ઈ.સ. ૧૯૬૬માં ગુણાતીત જ્યોતની સ્થાપના થતાં સર્વે બહેનો વિધાનગર રહેવા આવ્યાં. શરૂઆતમાં વિધાનગરમાં વાતાવરણ હાલ છે એવું સાનુકૂળ નહતું. બહેનો માટે તો ત્યાં રહેવું શું પણ જવું પણ જોખમભર્યું લાગતું. પરંતુ યોગીબાપાની કાકાજી-પપ્પાજીને આજ્ઞા હોવાથી વિધાનગરમાં જ ગુણાતીત જ્યોત થઈ જેથી સહુ બહેનો ત્યાં રહેવા ગયાં ત્યારે આ ચાર વડીલ બહેનોએ તેમનું ખૂબ જ રખોપું કર્યું. દેવીબહેનની વ્યવસ્થા શક્તિ અને આવડત નિહાળી પપ્પાજીએ શરૂઆતમાં તેમને જ્યોતની ઑફિસ સંભાળવાની કપરી સેવા આપી હતી. પરંતુ તેમાં પણ પપ્પાજીના બળે અને હોંશિયારીથી ખૂબ જ સુંદર સેવા કરી સહુ વડીલોનો રાજીપો તેમણે મેળવ્યો. ઈ.સ. ૧૯૮૦માં પપ્પાજી પહેલવહેલી વખત પરદેશ કલ્યાણ યાત્રાએ પધાર્યા ત્યારે તેમની બધી જ પ્રકારની સગવડ સચવાય એ હેતુથી દેવીબહેન પણ એમની સાથે ગયાં. ત્યાંના નવા સમાજને અક્ષરપુરુષોત્તમની નિષ્ઠા, ગુણાતીત સમાજ અને પપ્પાજી માટે વ્યવસ્થિતપણે ખ્યાલ આવે તે માટે ખૂબ જ દાખડો કર્યો. પપ્પાજીએ જ્યારથી તેમને પરદેશના સમાજના નેતા બનાવ્યાં ત્યારથી અવારનવાર પરદેશ જઈને સર્વે મુક્તોને સત્સંગ માટે ખૂબ જ બળભરી વાતો કરી તેમની નિષ્ઠા, સમર્પણ, ભક્તિ વગેરેમાં જોમ પ્રેર્યું. દેવીબહેનનાં હેત અને માવજતથી ઘણાં પરદેશનાં બહેનો પણ ભગવાન ભજવા માટે કટિબદ્ધ થયાં અને સહુને ગુણાતીત સમાજ પ્રતિ અનેરો સદ્ભાવ થયો. દેવીબહેનની જાનદાની અને સમજ એવી હતી કે ક્યારેય કોઈને અભાવ-અવગુણમાં જવા જ ન દે અને સહુ માટે ખૂબ જ છૂપું ભજન પોતે તો કરે જ અને હેતવાળા સમાજને પણ કરાવે. સહુને ભગવાન જ કર્તાહર્તા છે એવી સાચી સૂઝ આપી બળમાં રાખે.

પોતાના આનંદી અને નિખાલસ સ્વભાવથી સહુ કોઈનેય વિપરીત પરિસ્થિતિમાં પણ તેઓ હસતાં રાખી શકતાં. ઘણી વખત પોતાની નાદુરસ્ત તબિયત કે પ્રતિકૂળ સંજોગોને પણ ગણકારતાં નહીં અને કેમ કરીને



Offering of Aarti and Garland to P.P. Deviben

પોતાને ભાગે આવેલી સેવા સર્વોપરી રીતે થાય અને સહુ વડીલ બહેનોને મદદરૂપ થવાય એ એક માત્ર લક્ષ્ય તેમણે જીવનભર રાખ્યું.

તા. ૮મી ફેબ્રુઆરીએ બપોરે તેમના પાર્થિવ દેહને સુશોભિત રથમાં પધરાવી તેની શોભાયાત્રા કાઢી ખૂબ જ ભક્તિભાવથી પપ્પાજી તીર્થ તેમને લઈ ગયાં અને ત્યાં સંતભગવંત સાહેબજી, પ.પૂ. અશ્વિનભાઈ, પ.પૂ. રતિકાકા અને અનુપમ મિશનના સંતભાઈઓ, ગુણાતીત જ્યોતનાં સંતબહેનો પ.પૂ. હંસાદીદી, પ.પૂ. પદ્મબહેન અને અન્ય બહેનો, પવઈથી પ.પૂ. વશીભાઈ, પૂ. અશ્વિનભાઈ, પૂ. માધુરીબહેન, પૂ. લીલુબહેન



Sabha for P.P. Deviben's Divine Smruti, Gunatit Jyot-Vidhyanagar



અને હરિભક્તો, દિલ્હીથી પ.પૂ. આનંદીદીદી અને અન્ય સંતબહેનો, સાંકરદાથી પ.પૂ. જયશ્રીબહેન અને સંતબહેનો તેમ જ સેંકડો સ્થાનિક ભક્તોએ તેમને ભાવભરી અંજલિ અર્પી. એમની અંત્યેષ્ટિમાં પવઈ મંદિરના મુકતો વતી માધુરીબહેન અને લીલુબહેને તેમને હાર પહેરાવ્યો હતો તથા પવઈ મંદિરના સંતભાઈઓ તથા હરિભક્તોએ તેમને વિશેષ શાલ અર્પણ કરી હતી. અંતિમ વિધિમાં ગુણાતીત પ્રકાશના અન્ય ભાઈઓ સાથે વશીભાઈ પણ સામેલ થયા હતા.

તા. ૯ થી ૧૬ ફેબ્રુઆરી દરમિયાન દેવીબહેનની સ્મૃતિમાં પપ્પાજી હોલમાં વિશિષ્ટ પારાયણ યોજાઈ હતી અને તા. ૧૬મીએ તેની પૂર્ણાહુતિ સભામાં પ.પૂ. દિનકરભાઈ, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પૂ. કિશોરભાઈ માર્ટર્સ, પૂ. એન્જીબહેન તથા હરિભક્તો ખાસ હાજર રહ્યાં હતાં અને તેમને શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કર્યાં હતાં.

દેવીબહેનના જવાથી સમગ્ર સત્સંગ સમાજને અને ખાસ તો ગુણાતીત જ્યોતનાં બહેનો અને ગુણાતીત જ્યોત પરિવારને ખૂબ જ મોટી ખોટ પડી છે જે પૂરી શકાય એવી તો નથી જ, પરંતુ દેવીબહેન જેવી નિષ્ઠા, સ્વધર્મ, સમજશક્તિ, ધૈર્ય, નિખાલસતા, ખાનદાની, આનંદમાં રહેવાની સહજ છટા તથા ગમે તેવા સંજોગોમાં સમતા રાખી સેવા કરી લેવાની તત્પરતા જેવા દિવ્ય ગુણો આપણાં સહુમાં આવે અને તે રીતે દેવીબહેનને સદૈવ આપણી સ્મૃતિમાં ચિરંજીવ રાખીએ એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ કાકાજી, ગુરુહરિ પપ્પાજી, પ.પૂ. સોનાબા અને સહુ ગુણાતીત સ્વરૂપોને ચરણે પ્રાર્થના...



॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

તા. ૬/૦૨/૨૦૨૪

પરમ પૂજ્ય દેવીબહેનની સ્મૃતિમાં...

‘છૂપી જિંદગી છે, છૂપી બંદગી છે,
છૂપો છે આ વૈભવ, છૂપી સાદગી છે,
છૂપા આ કુસુમની, મહેક પણ છૂપી છે,
છૂપા કોઈ ચમનની, છૂપી તાજગી છે.’

અમારી દષ્ટિએ **પ.પૂ. દેવીબહેનનું** જીવન ઉપરની ચાર પંક્તિઓમાં તાદશ થઈ જાય છે. જેમની હાજરીનો દેખાવ કે ઢંઢેરો ન હોય પણ જેમનાં હોવાથી જ એક પ્રકારનો હાશકારો અનુભવાય એવી છૂપી પણ વ્યાપક પ્રતિભા, રસોઈમાંના લવણની જેમ દેવીબહેનના વ્યક્તિત્વની આગવી પિછાણ હતી.

અમારા કુટુંબ સાથે દેવીબહેનને ૬૦ વર્ષથી પણ વધુ સમયની ઓળખ. અમે (હું અને મારા નાના ભાઈ ડૉ. મહેન્દ્રભાઈ મર્યન્ટ) ખૂબ જ નાના હતા ત્યારે મારાં માતા અક્ષરદામ સિદ્ધાવ્યાં હોવાથી અમારા ઉછેરની જવાબદારી મારાં મોટા બહેન ડૉ. મિનાક્ષીબહેન અને મૂદુલાબહેને સંભાળી હતી. વળી મિનાક્ષીબહેન ડૉક્ટરનો અભ્યાસ કરતાં હોવાથી તેમને વધુ સમય મળે તે માટે મૂદુલાબહેને સ્વેચ્છાથી જ ઉચ્ચ અભ્યાસ કે બીજી પ્રવૃત્તિઓને ગૌણ કરી અમારા ઉછેર માટે વધુ ધ્યાન આપતાં. તારદેવ મંદિર સાથેના સતત સંબંધને કારણે તેઓ અવારનવાર અમને લઈને તારદેવ જતાં. એ જ રીતે અમારે ઘર (જન્માષ્ટમી બિલ્ડીંગ)માં સભાઓ થતી, તેથી તારદેવથી પણ વડીલો, બહેનો અમારા ઘરે આવતાં. મૂદુલાબહેનને તારદેવનાં ચારેય વડીલ સંતબહેનો સાથે પ્રીતિ હતી. એ રીતે દેવીબહેનના સંપર્કમાં અમારે પણ આવવાનું થતું. જો કે તે વખતે તેઓ પણ વડીલના અભ્યાસમાં

વ્યસ્ત રહેતાં હોવાથી અમને એમનો વિશેષ લાભ મળતો નહતો. પણ મારાં બહેન કહેતાં કે ઘણી વખત ક્યાંક શિબિર-સભા કે સમૈયામાં જવાનું હોય તો અમને તૈયાર કરવામાં મૂઢલાબહેનને દેવીબહેન ખૂબ જ મદદરૂપ થતાં. આ રીતે અમારાં બચપણમાં એમની સંભાળ અને માવજતનો અમને લાભ મળ્યો છે, પણ તે વખતે અમારી કાચી ઉંમર અને બાળકબુદ્ધિને લઈને તે વખતે અમને તેમનો મહિમા કે અગત્યતા સમજાયાં નહતાં. એ પછી તો દેવીબેન વિધાનગર રહેવા ગયાં તેથી અમારે એમનો વિશેષ સંપર્ક ન રહેતો.

દેવીબહેનની ખાનદાની અને અદ્ભુત સમજણનો એક ખૂબ જ પ્રેરણાદાયી પ્રસંગ મારા જીવનમાં બન્યો એ જણાવું છું. થોડાં વર્ષો પહેલાં પ.પૂ. જ્યોતિબહેનનો અમૃતપર્વ તથા પ.પૂ. હંસાદીદીના દષ્ટાદિનની સુવર્ણ જ્યંતીનો સંયુક્ત મહોત્સવ પપ્પાજી તીર્થમાં ઉજવવામાં આવ્યો ત્યારે પવર્ષ મંડળ વતી એક ભાવનૃત્ય પ્રસ્તુત કરવાનો પ્રસ્તાવ આવ્યો અને તે માટે ભજન બનાવવાની સેવા મને સોંપવામાં આવી હતી. આ વાતના થોડા અરસા પહેલાં જ હરિધામમાં બ્ર.સ્વ.પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીના આત્મીય અમૃત મહોત્સવમાં ત્યાંના સંતોએ સ્વામીજીના મહિમાનાં થોડાં સુંદર ભજનો બનાવ્યાં હતાં. જેમાંનું એક મને ખૂબ ગમતું હતું. સુપ્રસિદ્ધ ગાયક કૈલાસ ખેર દ્વારા એ ભજનમાં સંગીત અને લયની સુંદર રજુઆતથી તેમાં નાવીન્ય લાગતું. જ્યોતિબહેન અને હંસાદીદી માટે એ ભજનના રાગ પરથી ભજન બનાવવા હરિધામના સંતો પાસે મેં અનુમતિ માંગી તો એમણે ખૂબ જ ઉદાર દિલે અને ઉત્સાહપૂર્વક મને અનુમતિ આપી. આમ એ ભજન તૈયાર થયું. પવર્ષની ચુવતીઓએ આ ભજન પર સુંદર ભાવનૃત્ય પ્રસ્તુત કર્યું અને તેને સારો પ્રતિભાવ મળ્યો.

આ પ્રસંગના થોડા મહિના પછી બીજા એક કેન્દ્રના વડીલ ગુરુ માટે તેમના એક હરિભક્તે ભજનની કેસેટ તૈયાર કરાવી જેમાં ઉપરોક્ત ભજન નજીવા ફેરફાર સાથે સામેલ કરવામાં આવ્યું. એ જ કેન્દ્રના અન્ય એક વડીલ હરિભક્તે આ બાબત મને પૂછ્યું ત્યારે મને ખૂબ જ આશ્ચર્ય થયું. કારણ કે તે માટે મને અગાઉથી કોઈ જાણ કરવામાં આવી નહતી. પરિસ્થિતિ એવી નિર્માણ થઈ હતી કે મેં લખેલા ભજનના શબ્દોની ઉઠાંતરી કરી એ જ રાગમાં નવું ભજન તૈયાર કરવામાં આવ્યું ને મને ડર એ લાગતો હતો કે આવી હરકત તો હું સ્વપ્નમાંય ન કરું ને છતાં તેના પ્રેરક તરીકે અજાણતાં જ મારા નામની સંડોવણી થઈ જાય એમ હતું. તે વડીલ ભાઈ સાથે મારે સારી મિત્રતા હોવાથી તેઓ મારી વાત સમજી શક્યા ને આ બાબતમાં મારી કોઈપણ પ્રકારની પરોક્ષ કે પ્રત્યક્ષ રીતે સંડોવણી ન હોવાથી તેમણે તો આ વાત છેક પોતાના ગુરુ સુધી લઈ જઈ જેમણે આ ભજન આવી રીતે તૈયાર કરાવ્યું તેમને ઠપકો અપાવવાનો પણ પ્રસ્તાવ મૂક્યો. જો કે પાછળથી અમને એવી માહિતી મળી કે આ રીતે ભજન તૈયાર કરાવવામાં આપણા જ કેટલાક અંગત ભક્તોની સંમતિ હતી. તેથી મારે માટે તો ધર્મસંકટ જેવી નાજુક પરિસ્થિતિ ઊભી થઈ. શું કરવું એના વિચારમાં જ હતો ત્યાં જ દેવીબહેનનો મને સામેથી ફોન આવ્યો. મારા સ્વભાવથી તેઓ પરિચિત હોવાથી તેમણે મને ઘરપત આપી કે ‘અમને ખબર છે કે તું આ રીતે બહેનો કે કોઈને પણ માટે બનાવેલા ભજનની ઉઠાંતરી કરે નહીં અને કરવા દે પણ નહીં. પણ હવે એમાં આપણા જ અંગત ભક્તોની દોરવણી કે જાણે-અજાણે સંમતિ આપવામાં આવી છે તો તું હવે કાંઈપણ વાતનું વતેસર કરતો નહીં. અમને બહેનોને તારા માટે કોઈ ગેરસમજૂતી નથી, તેથી નિશ્ચિંત રહેજે અને આ વાતને અહીં જ દાબી દેજે. તારી નિર્દોષતાનો પણ બચાવ કરતો નહીં, ફક્ત ભજન જ કરજે.’

દેવીબહેનનો ફોન આવ્યા બાદ મારું મન ખૂબ જ હળવું થઈ ગયું. બન્ને કેન્દ્રોના વડીલો તરફથી કોઈ ગેરસમજૂતી નથી થઈ એવી સ્પષ્ટતા મારે કરવી જ ન પડી. એ વાતની ચર્ચા કે વિવાદ ન થાય તે માટે મેં એ વિષય પર વિચાર કરવાનું જ બંધ કરી દીધું અને મારા આશ્ચર્ય વચ્ચે મને કોઈએ કશું પૂછ્યું પણ નહીં કે મારે પણ સામેથી કોઈ ખૂલાસો આપવો પડ્યો નહીં.

મને ખાતરી છે કે દેવીબહેને મારી પરિસ્થિતિ સમજી મારા માટે છૂપું ભજન કર્યું જ હશે. કદાચ મારા વતી બીજા કેન્દ્રના વડીલો સાથે ચોખવટ પણ કરી હશે. પણ મને તેમણે જે સમજણ આપી, જાગ્રતતા આપી,

આપણી નિર્દોષતાનો બચાવ કર્યા વગર – પ્રસિદ્ધિ કે ગેરસમજ, આક્ષેપ કે પ્રશસ્તિ ભગવાન પર જ છોડીને કે કેવળ ભજનનો જ આધાર લેવાની જે અદ્ભુત સૂઝ આપી તે જ તેમની મારા પ્રત્યેની કોઈ છૂપી આત્માની માવજત હતી. જે મારે મન તેમની ખાનદાની અને સમજણની સચોટ પ્રતીતિ છે. આ જ એમનો આપણા આત્મા સાથેનો સુહૃદભાવ છે. આવા જ્યોતિર્દરો અને દ્યુવતારકોની સંભાળ અને જતનને કારણે જ ગમે તેવી વિપરીત પરિસ્થિતિમાં પણ આપણે સ્વસ્થ અને પ્રફુલ્લિત રહી શકીએ છીએ.

પૂરપાટ વેગે ચાલી રહેલા વાહનમાં બેઠેલા મૂસાફરની યાત્રા સરળ ને આહ્લાદક બને તે માટે ગાડીના ચાલક કે એન્જિનની ક્ષમતા જેટલી જ અગત્યતા તેનાં પૈડાં પર જોડાયેલાં Shock Absorbers (પ્રઘાત શોષક)ની હોય છે. તે Shock Absorbers જેટલાં મજબૂત અને લચીલાં હોય તેટલા ઝાટકા યાત્રીને ઓછા લાગે. દેવીબહેન આપણા સમાજનાં શ્રેષ્ઠ અને સક્ષમ Shock Absorber હતાં.

એમના પ્રેરણાદાયી જીવનમાંથી આપું લચીલાપણું, છૂપા ભજનની ટેવ, હૈયાની વિશાળતા, છૂપી ખાનદાની અને સુહૃદભાવ આપણા જીવનમાં ચત્કિચિત્ પણ સાકાર થાય એવી ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ કાકાજી, ગુરુહરિ પપ્પાજી અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને ચરણે પ્રાર્થના.

– પ.ભ. હેમંતભાઈ મર્યંત



પરમ પૂજ્ય દેવીબહેનનાં મહાપ્રસ્થાને...

આજથી ૮૭ વર્ષે પૂર્વે મુંબઈમાં ચતુરભાઈ પટેલ અને ચંચળબહેનને ઘરે પુત્રીરૂપે એક મહામુક્ત આવ્યા. નામ આપ્યું ‘લક્ષ્મીબહેન.’

લક્ષ્મી એટલે તો સંપત્તિ અને સમૃદ્ધિ.

પણ આ લક્ષ્મી નહતી કેવળ ભૌતિક કે લૌકિક,

એ તો હતી એથીય અત્યાધિક, અલૌકિક!

પ્રજ્ઞાલક્ષ્મી, સંસ્કારલક્ષ્મી, ચારિત્ર્યલક્ષ્મી, વૈભવલક્ષ્મી, ગરિમાલક્ષ્મી,

એમની અટક હતી પટેલ.

પટેલ એટલે તો સાહસ, શૌર્ય અને વટ,

પણ આ તો હતા જીવનનૈયાના એક અનોખા કેવટ,

અટકમાં અટવાયાં નહીં, વટ થકી વટલાયાં નહીં,

પંચાત કે પટલાઈ કોઈનાં કર્યાં નહીં, કરવા દીધાં નહીં,

સાહસ અને શૌર્યથી નિજને સંપૂર્ણ ઓગાળી,

સહુનાં દાસ બનીને રહ્યાં એ સૌથી છેવટ.

અને એટલે જ લક્ષ્મીમાંથી બન્યાં ‘દેવી’,

એની વાત શબ્દોમાં શું કહેવી?

પરમ પૂજ્ય દેવીબહેન!

પ્રાથમિક અભ્યાસ પૂરો કરી ઉચ્ચ અભ્યાસ કરી એ થયાં હતાં વકીલ.

અને વકીલ એટલે તો દલીલ,

કદી ના માને હાર, કદી ન ઝૂંકે, કદી ના ટૂટે કે કદી ના મૂકે ઢીલ!

પણ આ તો અલૌકિક દિવ્ય વકીલ!

પ્રત્યક્ષ ગુરુહરિ પરમ પૂજ્ય પપ્પાજીને ચરણે આવીને

અતિ દઢ કર્યો નિર્ધાર કે

‘તમે સોગઠાં ફેંક્યા પહેલાં, અમે કબૂલી હાર!’

પોતાનું નામ જ રાખ્યું ‘મંગુ’, ‘મંગુ’ એટલે દાસી,

અંગત લૌકિક ઈચ્છા, આંકાક્ષાઓની રહી સદા ઉપવાસી!

ભચ્યુવાનીમાં રહી એ સન્યસ્તવની પ્યાસી,

યોગીજી અને કાકાજી, સોનાબા અને પપ્પાજી,

સૌની મરજીમાં ભળી જઈને કહ્યું બસ હાજી, હાજી,

યોગીજીને રાજી કર્યા, કાકાજીને રીઝવ્યા,

બાનાં વાતસલ્ચે ભીંજાયાં અને પપ્પાજીને સમર્પિત થયાં!

તારા, જ્યોતિ અને દીદી સંગ, લાગ્યો અનેરો સત્સંગ રંગ,

ભીડાભક્તિમાં ભીંસાઈને કંચન સમ અંદરથી ઓગળી ગયાં.

પપ્પાજીની જેમ જ શબ્દોના સરવાળા નહીં,

પણ મૌન તણા ગુણાકારોથી દિવ્ય ગુણિયલ આદર્શ બન્યાં!

પરમ પૂજ્ય દેવીબહેન!

ગુણાતીત જ્યોતના દિવ્ય રથનાં પ્રથમ ચાર ચક્રોમાં સ્થાન પામ્યાં,

અને જીવનની અંતિમ પળ સુધી સહુનો ભાર વહ્યો,



અને સહુને તેજ ગતિએ ઘોડાવ્યાં.

આ ચાર ચક્કો પણ અનોખાં,
સ્વયં ઘોડીને ગતિ આપે અને

પ્રઘાત શોષક (Shock Absorber) તરીકે

સહુની યાત્રા આહ્લાદક કરે,

પોતે ભીડો ખમીને અન્યને સાનુકૂળતા કરે,

જેમ માતા શીશુને નીરોગી રાખવા, પોતે પાળે ચરી,

એમ આપણા આધ્યાત્મિક નિરામય સ્વાસ્થ્ય માટે,

આ બહેનોએ આકરી તપશ્ચર્યા કરી!

તપસ્યા તનની, મનની, ઘનની, સમય, સમાજ, સંજોગોની.

તમામ પ્રતિકૂળતાઓ સામે બધી જ રીતે ઝઝૂમ્યાં,

અને આપણે માટે સુવાળી સેજ પાથરી!

પરમ પૂજ્ય દેવીબહેન!

જ્યાં ગયાં, થોભ્યાં કે રહ્યાં, ત્યાં બધે જ,

જેમ-તેમ, જ્યારે-ત્યારે, જેવું-તેવું, બધું જ પોતાનું માનીને અપનાવ્યું,

દેહના પ્રતિકૂળ સ્વાસ્થ્યને અવગણ્યું,

આપણા આત્માનું સ્વાસ્થ્ય નિરામય રાખ્યું,

સહજ અખંડ આનંદમાં રહ્યાં, રાખ્યાં અને રહેતાં કર્યાં,

ક્યાંય થોભ્યાં કે અટક્યાં નહીં.

અસ્ખલિત વહેતી સરિતાની જેમ વહેતાં રહ્યાં અને સહુને વહેતાં રાખ્યાં.

હે વહાલાં દેવીબહેન!

આપની જીવનનીતિ અને જીવનરીતિની જેમ,

દાસત્વભક્તિને લક્ષ બનાવીએ,

સહજ આનંદનું વક્ષ બનાવીએ,

એ જ રીતે આપને સાચી અંજલિ અર્પીએ,

આપને સાચી અંજલિ અર્પીએ...

‘અક્ષરધામ’ મંદિર, પવર્ધના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.



Summary of Events

- (1) Saint Brothers' visit to Kalgam and Nargol for Jholi Sabha on 5th and 6th January.
- (2) P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin celebration on 6th January at Rumla and Vapi.
- (3) Special Mahapooja and P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin on 7th January Morning at Rumla.
- (4) Bhajan Sandhya on 7th January at Chikhli.
- (4) Saint Brothers' visit to Gujarat from 8th to 11th January.
- (5) Jholi Sabha at Thane on 12th January.
- (6) P.P. Aanandididi's 63rd Pragatyadin celebration at Delhi on 13th January.
- (7) Visit by P.P. Vashibhai at Pune on 13th and 14th January.
- (8) Jholi Sabha on the auspicious occasion of Makarsankranti on 14th January at "Akshardham" Temple, Powai.
- (9) Saint Brothers' Visit to Thiruvananthapuram, Kerala from 17th to 20th January.
- (10) Visit by P.P. Vashibhai at Nasik on 18th January.
- (11) Jholi Sabha at Tardeo on 19th January.
- (12) Special celebration for consecration of Ramlalla Murti at Ayodhya which was celebrated all over India on 22nd January.
- (13) Saint Brothers' visit at Ahmedabad on 24th January.
- (14) Poshni Poonam function at Brahmajyoti - Mogri on 25th January.
- (15) Patotsav Mahapooja at Guruhari Kakaji Maharaj's Pragatyasthan (Birth Place) at Nadiad on 26th January.
- (16) P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin celebration at Powai on 28th January.
- (17) B.S. Shastriji Maharaj and P.P. Bharatbhai's Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 31st January.
- (18) Visit by P.P. Vashibhai and P. Ashwinbhai at Fireside chat of Business line Conference on 2nd February.
- (19) Article for Guruhari Kakaji Maharaj's 72nd Sakshatkar Din on 3rd February.
- (20) P.P. Barister Saheb's Swadhmgaman on 22nd January at Brahmajyoti-Mogri.
- (21) P.P. Deviben's Swadhmgaman on 6th February at Vallabh Vidhyanager.
- (22) Homage to P.P. Deviben by "Akshardham" Temple's Saint Brothers, Saint Sisters and Devotees.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From



YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonawala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta